संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

हिन्दी

मूल्य : ₹ ६
प्रकाशन दिनांक :
१ जून २०१४
वर्ष : २३ अंक : १२
(निरंतर अंक : २५८)

कुछ वर्ष पूर्व पूज्य बापूजी ने श्री नरेन्द्रभाई मोदी को आशीर्वाद देते हुए कहा था : ''हम आपको देश के प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहते हैं ।''
पूज्य बापूजी का वह संकल्प साकार हुआ है ।

''मेरा ऐसा सौभाग्य रहा है कि जीवन में जब कोई नहीं जानता था उस समय से बापूजी के आशीर्वाद मुझे मिलते रहे हैं, स्नेह मिलता रहा है । मैं मानता हूँ कि बापू के शब्दों में एक यौगिक शक्ति रहती है । उस यौगिक शक्ति के भरोसे हम करोड़ों गुजरातवासियों के सपने साकार होंगे ।'' – श्री नरेन्द्रभाई मोदी, तत्कालीन मुख्यमंत्री, गुजरात; वर्तमान प्रधानमंत्री

(पढ़ें पृष्ठ ७)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी

श्री राजनाथ सिंह

श्री लालकृष्ण आडवाणी

श्री नितिन गडकरी

श्री शिवराज सिंह चौहान

डॉ. रमन सिंह

श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया

श्रीमती आनंदी बहन पटेल

डॉ. मुरली मनोहर जोशी

वर्ष २०१३-१४ में भी गुरुकुलों के बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट परिणाम

भारतीय पद्धति पर आधारित इन गुरुकुलों में आध्यात्मिक उन्नति और उच्च संस्कार-सिंचन तो होता ही है, साथ-ही-साथ ऐहिक शिक्षा जगत की उच्चतम ऊँचाइयाँ पाना भी विद्यार्थियों के लिए सुगम हो जाता है। प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी १०वीं व १२वीं बोर्ड की परीक्षाओं में गुरुकुल के विद्यार्थियों ने उत्तम सफलता प्राप्त की है।

* प्रत्येक वर्ष की भाँति इस बार भी CBSE बोर्ड के आगरा, भोपाल, छिंदवाड़ा, इंदौर, जयपुर गुरुकुलों का १०वीं बोर्ड का परिणाम १००% रहा।
* अहमदाबाद गुरुकुल के १०वीं और १२वीं (गुजरात बोर्ड) का परिणाम १००% रहा। १०वीं के ५०% विद्यार्थियों ने विशेष प्रवीणता (७५% से अधिक अंक) प्राप्त की तथा ९६% विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

इस वर्ष १०वीं बोर्ड परीक्षा परिणाम की झलकें (CGPA 10.0 में से)

लक्की राय, छिंदवाड़ा, १०.०

अजय अग्रवाल, छिंदवाड़ा, १०.०

राधेश्याम मंडलोई, इंदौर, १०.०

दिनेश सुथार, छिंदवाड़ा, ९.८

अभिषेक कुमार, जयपुर, ९.४

रमाशंकर सिंह, छिंदवाड़ा, ९.४

अभिषेक कुमार, छिंदवाड़ा, ९.४

तरुण चौधरी, आगरा, ९.४

ऋषभ राज, आगरा, ९.४

विजय चौधरी, इंदौर, ९.४

ऋषि राज, जयपुर, ९.२

शरद नायक, भोपाल, ९.२

सन्नी सिंह, आगरा, ९.२

हर्षद साहू, इंदौर, ९.२

चेतन साहू, इंदौर, ९.२

अर्जुन ठाकुर, भोपाल, ९.०

टंडेल ध्रुव, सूरत, ९९.२८ PR

माधव पटेल, अहमदाबाद, ९८.७६ PR

गुंजन अमलियार, अहमदाबाद, ९८.७६ PR

निर्मल गरासिया, अहमदाबाद, ९८.५८ PR

रामकृष्ण चौहान, अहमदाबाद, ९८.३९ PR

हरि ॐ कर्ण, अहमदाबाद, ९८.३२ PR

नारायण वाग्ले, अहमदाबाद, ९७.३५ PR

ब्रिजेश मौर्य, अहमदाबाद, ९६.७२ PR

नारायण दुबे, सूरत, ९४.२३ PR

(PR = Percentile Rank)

इस वर्ष १२वीं बोर्ड परीक्षा परिणाम की झलकें

मुस्कान मल्होत्रा, आगरा, ९५.८%

शिवेन्द्र सिंह, आगरा, ९२%

ज्योति चोटवानी, आगरा, ९१.२%

कुणाल कुमार, जयपुर, ८८.८%

वैभव साहू, छिंदवाड़ा, ८७.८%

अमित चौधरी, आगरा, ८७.८%

पंकज कुमार, आगरा, ८५.८%

लक्ष्मीनारायण व्यास, इंदौर, ८४.८%

रवि प्रजापति, अहमदाबाद, ९७.११ PR

विशेष सूचना : सभी गुरुकुलों में सत्र २०१४-१५ के लिए प्रवेश चालू हैं। गुरुकुलों में अध्यापन हेतु विज्ञान, गणित, वाणिज्य और अंग्रेजी विषयों के लिए T.G.T. (B.Sc., B.Ed.) & P.G.T. (M.Sc., M.Com.) अनुभवी, मंत्रदीक्षित शिक्षकों की आवश्यकता है। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें –
ई-मेल : gurukul@ashram.org www.gurukul.ashram.org फोन : ९०२३२६८८२३

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २३ अंक : १२
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २५८)
प्रकाशन दिनांक : १ जून २०१४
मूल्य : ₹ ६
ज्येष्ठ-आषाढ़ वि.सं. २०७१

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : ₹ ६०/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक : ₹ ३००/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

रोज सुबह ७-३० व रात्रि १० (केवल मंगल, गुरु, शनि)

रोज सुबह ७.०० बजे

रोज सुबह ६.३० बजे

पर उपलब्ध
www. ashram.org पर उपलब्ध

इंटरनेट टीवी

विश्वप्रेम की जाग्रत मूर्ति हैं सद्गुरुदेव

- पूज्य बापूजी

गुरुपूर्णिमा
१२ जुलाई

सद्गुरु-महिमा

गुरु के बिना आत्मा-परमात्मा का ज्ञान नहीं होता है। आत्मा-परमात्मा का ज्ञान नहीं हुआ तो मनुष्य पशु जैसा है। खाने-पीने का ज्ञान तो कुत्ते को भी है। कीड़ी को भी पता है कि क्या खाना, क्या नहीं खाना है, किधर रहना, किधर को भाग जाना। किधर पूँछ हिलाना, किधर पूँछ दबाना यह तो कुत्ता भी जानता है लेकिन यह सब शारीरिक जीवन का ज्ञान है। जीवन जहाँ से शुरू होता है और कभी मिटता नहीं, उस जीवन का ज्ञान आत्मज्ञान है।

भगवान शिवजी ने पार्वतीजी को वामदेव गुरु से मंत्रदीक्षा दिलायी और कालीमाता ने प्रकट होकर गदाधर पुजारी को कहा कि 'तोतापुरी गुरु से ज्ञान लो' और महाराष्ट्र के नामदेव महाराज को भगवान विट्ठल ने प्रकट होकर कहा : 'विसोबा खेचर से दीक्षा लो।' तो गुरु के ज्ञान के बिना, आत्मज्ञान के प्रकाश के बिना जीवन निर्दुःख नहीं होता है।

सोने की लंका पा ली रावण ने लेकिन निर्वासनिक नहीं हुआ, निर्दुःख नहीं हुआ और शबरी भीलन ने केवल मतंग गुरु का सत्संग सुना और गुरुवचनों का आदर किया तो वह निर्वासनिक हो गयी, निर्दुःख हो गयी, आत्मरस से ऐसी पवित्र हो गयी कि भगवान राम शबरी भीलन के जूठे बेर खाते हैं। मीरा का भोग लगता तो श्रीकृष्ण खाते हैं। भगवान की भक्ति और भगवान का ज्ञान सत्संग से जैसा मिलता है, ऐसा सोने की लंका पाने से भी नहीं मिलता।

व्यासपूर्णिमा, गुरुपूर्णिमा कितना दिव्य ज्ञान देती है कि हम भगवान वेदव्यास के ऋणी हैं, गुरु के हम आभारी हैं। जिसके जीवन में सद्गुरु नहीं हैं उसका कोई सच्चा हितैषी भी नहीं है। बिना गुरु के व्यक्ति मजदूर है, संसार का बोझा

उठा-उठा के मर जाते हैं।

गुरुजी का पूजन करने से कालसर्पयोग कट जाता है। नहीं तो कितना पूजा-पाठ कराओ, हजारों रुपये खर्च कराओ फिर भी कालसर्पयोग थोड़ा-बहुत कम होता है और थोड़ी कठिनाई रहती है लेकिन गुरुपूनम के दिन अथवा किसी भी दिन गुरुजी का मानसिक पूजन करके प्रदक्षिणा करे तो कालसर्पयोग का प्रभाव खत्म ! कालसर्पयोग बड़ा दुःख देता है लेकिन गुरुपूजन से, गुरुध्यान से, गुरुमंत्र के जप और गुरु के आदर से कालसर्पयोग चला जाता है।

गुरु किसको बोलते हैं ? जो विश्वप्रेम की जाग्रत मूर्ति हैं। विश्व की किसी भी जाति का आदमी हो, किसी भी मजहब का हो सबके लिए जिनके हृदय में आत्मप्रेम है वे हैं सद्गुरु।

गुरुकृपा हि केवलं...

गुरुकृपा क्या होती है ? जो संत हैं, सद्गुरु हैं वे मरनेवाले शरीर में अनंत का दर्शन करा देंगे। जो मुर्दा शरीर है, शव है, उसमें शिव का साक्षात्कार, जो जड़ है उसमें चेतन का अनुभव करा दे उसको बोलते हैं गुरुकृपा। जैसे चन्द्रमा से चकोर तृप्ति पाता है, पानी से मछली आनंद पाती है और भगवान के दर्शन से भक्त आनंदित होते हैं, ऐसे ही सद्गुरु के दर्शन से सत्संगी आनंदित, आह्लादित और ज्ञानसम्पन्न होते हैं। मेरे को अगर गुरु नहीं मिले होते तो मैंने जितनी तपस्या की उससे हजार गुना भी ज्यादा करता तो भी इतना मुझे फायदा नहीं होता जितना गुरुकृपा से हुआ। बिल्कुल सच्ची, पक्की बात है।

मैं अपने बापूजी (भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज) की बात करता हूँ। साँईं से (मन-ही-मन) बातचीत हुई। वे पूछ रहे थे : ''छा खपे ?'' मतलब क्या चाहिए ? मैंने कहा : ''जंहिं खे खपे, तंहिं खे खपायो।'' मतलब जिसको चाहिए उसीको खपा दो। जो अब भी चाहनेवाला है तो उसीको खपाओ। बहुत हँसे, आनंदित हो रहे थे।

आध्यात्मिक ज्ञान गुरु-परम्परा से ही मिलता है। नाथ सम्प्रदाय में पुत्र-पिता की परम्परा नहीं होती है, गुरुवंश की परम्परा होती है। गोरखनाथजी मत्स्येन्द्रनाथजी के पुत्र हैं। मत्स्येन्द्रनाथजी अपने गुरु के पुत्र हैं। दैहिक पिता की परम्परा नहीं चलती, आध्यात्मिक पिता की परम्परा चलती है। आशाराम थाऊमल नहीं चलेगा, आशाराम लीलाशाहजी। लीलाशाहजी केशवानंदजी चलेंगे। केशवानंदजी से और आगे चलेंगे। ऐसे करते-करते दादू दयालजी तक परम्परा जायेगी और दादू दयालजी से आगे जायेंगे तो ब्रह्माजी तक, और आगे जायेंगे तो विष्णु भगवान तक। विष्णु भगवान जहाँ से पैदा हुए उस ब्रह्म तक की हमारी परम्परा है, आपकी भी वही है। देखा जाय तो आपका-हमारा मूल ब्रह्म ही है।

ज्ञान की परम्परा से दीये से दीया जलता है। तोतापुरीजी के शिष्य रामकृष्ण परमहंस, रामकृष्ण से ज्ञान मिला विवेकानंदजी को। ऐसे ही अष्टावक्र मुनि हो गये, उनके शिष्य थे राजा जनक और जनक से ज्ञान मिला शुकदेवजी को। उद्दालक से आत्मसाक्षात्कार हुआ श्वेतकेतु को, भगवान सूर्य से याज्ञवल्क्य को और याज्ञवल्क्य से मैत्रेयी को।

तो यह ज्ञान किताबों से नहीं मिलता, दीये से दीया जलता है। हयात महापुरुषों से ही आत्मसाक्षात्कार होता है, पुस्तक पढ़ के कोई साक्षात्कारी हो जाय यह सम्भव ही नहीं है। सद्गुरु के संग से बुद्धि की ग्रहणशक्ति बढ़ती है, बुराइयाँ कम होती हैं, वर्षों की थकान मिटती है।

'वह भगवान, यह भगवान, यह मिले, वह मिले...' अरे ! जो कभी नहीं बिछुड़ता है उस मिले-मिलाये में विश्रांति सद्गुरु की कृपा से ही होती है।

गुरुमंत्र का माहात्म्य

'गुरु' शब्द कैसा होता है पता है ?

गुरु शब्द में जो 'ग'कार है वह सिद्धि देनेवाला है, 'र'कार है वह पाप को हरनेवाला है और 'उ'कार अव्यक्त नारायण के साथ, हरि के साथ जोड़ देता है केवल गुरु शब्द बोलने से। 'गुरु' शब्द बहुत प्रभावशाली है और गुरु-

दर्शन, गुरु-आशीष बहुत-बहुत कल्याण करता है। भगवान का एक नाम 'गुरु' भी है। तो और सब 'पूर्णिमा' हैं लेकिन यह आषाढ़ मास की पूर्णिमा 'गुरुपूर्णिमा' है अर्थात् पाप, ताप, अज्ञान, अंधकार मिटानेवाली बड़ी पूर्णिमा, भगवान से मिलानेवाली पूर्णिमा और सिद्धि देनेवाली पूर्णिमा है। ऐसी है गुरुपूर्णिमा। जैसे 'गं गं गं' जप करें तो बच्चों की पढ़ाई में सिद्धि होती है। ऐसे ही 'गुरु, गुरु, गुरु' जपें तो भक्तों का मनोरथ पूरा होता है। भगवान शिवजी कहते हैं :

गुरुमंत्रो मुखे यस्य तस्य सिद्ध्यन्ति नान्यथा।...

'जिसके मुख में गुरुमंत्र है उसके सब कर्म सिद्ध होते हैं, दूसरे के नहीं।' जिसके जीवन में गुरु नहीं हैं उसका कोई सच्चा हित करनेवाला भी नहीं है। जिसके जीवन में गुरु हैं वह चाहे बाहर से शबरी भीलन जैसा गरीब हो फिर भी सोने की लंकावाले रावण से शबरी आगे आ गयी।

गुरुपूर्णिमा का महत्त्व

ब्राह्मणों के लिए श्रावणी पूर्णिमा, क्षत्रियों के लिए दशहरे का त्यौहार, वैश्यों के लिए दीपावली का त्यौहार तथा आम आदमी के लिए होली का त्यौहार... लेकिन गुरुपूनम का त्यौहार तो सभी मनुष्यों के लिए, देवताओं के लिए, दैत्यों के लिए - सभीके लिए है। भगवान श्रीकृष्ण भी गुरुपूनम का त्यौहार मनाते हैं, अपने गुरु के पास जाते हैं। देवता लोग भी अपने गुरु बृहस्पति का पूजन करते हैं और दैत्य लोग अपने गुरु शुक्राचार्य का पूजन करते हैं और सभी मनुष्यों के लिए गुरुपूर्णिमा का महत्त्व है। इसको व्यासपूर्णिमा भी बोलते हैं। यह मन्वंतर का प्रथम दिन है। महाभारत का सम्पन्न दिवस और विश्व के प्रथम आर्षग्रंथ 'ब्रह्मसूत्र' का आरम्भ दिवस है व्यासपूर्णिमा।

एटलांटिक सभ्यता, दक्षिण अमेरिका, यूरोप, मिस्र, तिब्बत, चीन, जापान, मेसोपोटेमिया आदि में भी गुरु का महत्त्व था, व्यासपूर्णिमा का ज्ञान, प्रचार-प्रसार का लाभ उन लोगों को भी मिला है।

कितने भी तीर्थ करो, कितने भी देवी-देवताओं को मानो फिर भी किसीकी पूजा रह जाती है लेकिन गुरुपूनम के दिन गुरुदेव की मन से पूजा की तो वर्षभर की पूर्णिमाएँ करने का व्रतफल मिलता है और सारे देवताओं व भगवानों की पूजा का फल मिल जाता है।

बापूजी पर लगाये गये सभी आरोप हैं निराधार : संत-समाज (संत-सम्मेलन, जम्मू)

श्री सतपालसिंहजी राठौर, मंत्री, सनातन धर्म सभा, जम्मू : हमारे परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू को झूठे केस में फँसाया गया। एक लड़की कहती है कि वह रात को माता-पिता को साथ लेकर बापूजी के पास गयी, माँ वहीं बाहर ही बैठी थी, पिता थोड़े ही अंतर पर थे। वह बाहर आयी, माँ को साथ लेकर चली गयी, आराम से सोयी।

अक्षले दिन वह उठती है फिर हँसती-खेलती है, खाती-पीती है और माता-पिता के साथ चली जाती है। ५ दिन बाद रात २.४५ बजे दिल्ली में वह अपने पिता के साथ जाकर रिपोर्ट लिखवाती है कि 'मेरे साथ यह हुआ...।' हम बुद्धिजीवी लोग हैं, भगवान ने दिमाग दिया है, किसी लड़की के साथ यदि ऐसी घटना घट जाय तो ५ दिन तक वह आराम से रह सकती है क्या ? साफ है कि इसके पीछे एक षड्यंत्र है।

श्री नरेन्द्रदासजी महाराज, अध्यक्ष, श्री हनुमान धाम, जम्मू : बापूजी पर लगाये गये सभी आरोप निराधार हैं। सभी षड्यंत्र करके लगाये हैं। आप इन्हें कभी सत्य नहीं मानना। यदि इन्हें सत्य मानते हैं तो वह बड़ा गुनाह होगा।

(शेष पृ.१२ पर)

महापुरुषों का भारत को विश्वगुरु बनाने का सत्यसंकल्प श्री नरेन्द्र मोदी जैसे कर्मयोगियों द्वारा शीघ्र साकार होगा

हमारी भारतीय संस्कृति में माता-पिता और गुरुजनों को प्रणाम करके उनका आशीर्वाद लेना यह जीवन में सफलता की चाबी कही गयी है । भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण, भक्त पुंडलिक, श्रवण कुमार, छत्रपति शिवाजी, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, लाल बहादुर शास्त्री, संत श्री आशारामजी बापू... ऐसे अनेक संत, महापुरुष, भक्त एवं राजनेता हुए हैं जिन्होंने माता-पिता और गुरुजनों के आदर, वंदन एवं सेवा की पावन मिसाल कायम की।

वर्तमान में भी कुछ ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनका जीवन उपरोक्त संस्कारों से परिपूर्ण है । इनमें से एक हैं भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी । वर्ष २०१४ के चुनावों में हासिल हुई जीत के बाद श्री नरेन्द्रभाई मोदी ने सबसे पहले अपनी ९६ वर्षीया माँ 'हीरा बा' के पास जाकर उनके पैर छुए और आशीर्वाद लिया।

ऐसे संस्कृतिप्रेमी राजनेता भगवान व संतों-महापुरुषों की कृपा और करोड़ों-करोड़ों भक्तों-साधकों की शुभ-भावना एवं स्नेह प्राप्त कर लेते हैं।

श्री नरेन्द्र मोदी एक जिज्ञासु साधक हैं। उन्होंने अनेक बार पूज्य बापूजी के दर्शन, सत्संग व सान्निध्य का लाभ लिया है। उनके वचनों में : ''मैंने तो पूज्य बापूजी को हरियाणा में बैठकर सुना है, पंजाब में भी सुना है, राजस्थान में भी सुना है, उत्तर प्रदेश के गलियारों में सुना है। समग्र राष्ट्र में सामूहिक सत्संग के द्वारा एक नयी चेतना जगी है और उसका एक नया प्रभाव शुरू हुआ है।''

''मेरा ऐसा सौभाग्य रहा है कि जीवन में जब कोई नहीं जानता था, उस समय से बापूजी के आशीर्वाद मुझे मिलते रहे हैं, स्नेह मिलता रहा है। मैं मानता हूँ कि बापू के शब्दों में एक यौगिक शक्ति रहती है। उस यौगिक शक्ति के भरोसे हम करोड़ों गुजरातवासियों के सपने साकार होंगे।''

कुछ वर्ष पूर्व श्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तरायण शिविर के अवसर पर पूज्य बापूजी के दर्शन-सत्संग का लाभ लिया तथा शुभाशीष पाये थे। उन्होंने कहा था : ''मैं पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में प्रणाम करने आया हूँ। मैं मानता हूँ कि भक्ति से बड़ी दुनिया में कोई ताकत नहीं होती और भक्त हर कोई बन सकता है। हम सबको भक्त बनने की ताकत मिले, आशीर्वाद मिलें। मैं समझता हूँ कि संतों के आशीर्वाद ही हम सबकी बड़ी पूँजी होती है।

देशभर से आये हुए आप सबको (सत्संगियों को), एक लघु भारत के रूप में मैं अपने सामने देख रहा हूँ। इस

पवित्र धरती पर आये हुए आप सभीको मैं नमन करता हूँ।''

बड़ौदा के सत्संग समारोह में पधारे श्री नरेन्द्रभाई मोदी ने कहा था : ''पूज्य बापूजी ! आप देश और दुनिया - सर्वत्र ऋषि-परम्परा की संस्कार-धरोहर को पहुँचाने के लिए अथक तपश्चर्या कर रहे हैं। अनेक युगों से चलते आये मानव-कल्याण के इस तपश्चर्या-यज्ञ में आप अपने पल-पल की आहुति देते रहे हैं। उसमें से जो संस्कार की दिव्य ज्योति प्रकट हुई है, उसके प्रकाश में मैं और जनता - सब चलते रहें। मैं संतों के आशीर्वाद से ही जी रहा हूँ। मैं यहाँ इसलिए आया हूँ कि लाइसेंस रिन्यू हो जाय। पूज्य बापूजी ने आशीर्वाद दिया और आप सबको वंदन करने का मौका दिया, इसलिए मैं बापूजी का ऋणी हूँ।''

कुछ साल पहले बापूजी ने श्री नरेन्द्रभाई मोदी को शुभाशीष प्रदान करते हुए कहा था कि ''हम आपको देश के प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहते हैं।'' बापूजी के संकल्प में करोड़ों साधकों-भक्तों का संकल्प भी जुड़ गया और आज वह साकार हो चुका है।

संकल्पपूर्ति के लिए इस वर्ष चुनाव के दौरान साधकों ने अनेक स्थानों पर मतदाता जागृति रैलियाँ भी निकालीं एवं देश में परिवर्तन लाकर एक मजबूत, सक्षम सरकार प्रदान कराने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

भाजपा एवं सहयोगी दलों के वरिष्ठ राजनेताओं ने समय-समय पर पूज्य बापूजी के सत्संग-दर्शन का लाभ लिया है तथा सुशासन की प्रेरणा प्राप्त की है। बापूजी के प्रति आपके उद्‌गार हैं :

''मैं यहाँ पर पूज्य बापूजी का अभिनंदन करने आया हूँ, उनका आशीर्वचन सुनने आया हूँ... पूज्य बापूजी सारे देश में भ्रमण करके जागरण का शंखनाद कर रहे हैं, सर्वधर्म-समभाव की शिक्षा दे रहे हैं, संस्कार दे रहे हैं तथा अच्छे और बुरे में भेद करना सिखा रहे हैं। हमारी जो प्राचीन धरोहर थी और जिसे हम लगभग भूलने का पाप कर बैठे थे, बापूजी हमारी आँखों में ज्ञान का अंजन लगाकर उसको फिर से हमारे सामने रख रहे हैं।

बापूजी का प्रवचन सुनकर बड़ा बल मिला है। उनका आशीर्वाद हमें मिलता रहे, उनके आशीर्वाद से प्रेरणा पाकर बल प्राप्त करके हम कर्तव्य के पथ पर निरंतर चलते हुए परम वैभव को प्राप्त करें, यही प्रभु से प्रार्थना है।

१३ दिन के शासनकाल के बाद मैंने कहा : 'मेरा जो कुछ है, तेरा है।' यह तो बापूजी की कृपा है कि श्रोता को वक्ता बना दिया और वक्ता को नीचे से ऊपर चढ़ा दिया। जहाँ तक ऊपर चढ़ाया है वहाँ तक ऊपर बना रहूँ, इसकी चिंता भी बापूजी को करनी पड़ेगी।'' ***- श्री अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री***

यह बात जगजाहिर है कि इसके बाद श्री अटल बिहारी वाजपेयी पहले १३ महीने और फिर ४.५ साल तक प्रधानमंत्री पद पर रहे।

''मैं जानता हूँ इस सच्चाई को, चाहे इस भारत का कोई मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री क्यों न हो, पूरी पार्टी के द्वारा यदि उनकी कोई सार्वजनिक सभा आयोजित करनी हो, तब भी इतना बड़ा जनसमूह इकट्ठा नहीं किया जा सकता जितना बड़ा जनसमूह आज परम पूज्य बापूजी के दर्शन के लिए यहाँ पर अपनी आँखों के सामने देख रहा हूँ। सुबह ७ बजे से दोपहर १२.३० तक इतनी भीड़ जुटी रहे ऐसा किसी भी मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री की सभा में नहीं हो सकता, जो मैं यहाँ देख रहा हूँ।

हमारे सबके आस्था व विश्वास के केन्द्र परम पूज्य बापूजी के देशभर में तथा दुनिया के दूसरे देशों में जो प्रवचन चलते हैं, उनके द्वारा अध्यात्म की प्रेरणा हम सबको मिलती रहती है। मैं पुनः उनके चरणों में शीश झुकाकर उन्हें हृदय की गहराइयों से प्रणाम करता हूँ।'' ***- श्री राजनाथ सिंह, राष्ट्रीय अध्यक्ष भाजपा, वर्तमान केन्द्रीय गृहमंत्री***

'पूज्य बापूजी द्वारा दिया जानेवाला नैतिकता का संदेश देश के कोने-कोने में जितना अधिक प्रसारित होगा, जितना अधिक बढ़ेगा, उतनी ही मात्रा में राष्ट्रसुख का संवर्धन होगा, राष्ट्र की प्रगति होगी। जीवन के हर क्षेत्र में इस प्रकार के संदेश की जरूरत है।'

- श्री लालकृष्ण आडवाणी,
पूर्व केन्द्रीय गृहमंत्री एवं उपप्रधानमंत्री

''परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू विद्यार्थियों के लिए देश के कोने-कोने में आयोजित होनेवाले विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविरों में दुर्लभ एवं विस्मृत यौगिक क्रियाओं एवं अपने शुभ संकल्पों तथा प्रेरणादायी अनुभवसम्पन्न वचनों द्वारा उनमें आध्यात्मिक चेतना का संचार कर भारतीय संस्कृति से अनुप्राणित सुसंस्कारों का सिंचन करते हैं।''

- डॉ. मुरली मनोहर जोशी, तत्कालीन केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री

''श्रद्धेय पूज्य बापूजी ने मुझे आशीर्वाद दिया है। उनके आशीर्वाद से मुझे समाज में अच्छा कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

करोड़ों लोगों को जीवन जीने का मार्ग आपके विचारों से मिलता है। संस्कार और शिक्षा के माध्यम से आपने यह जो लोक-प्रबोधन किया है, इससे हमारे देश में और समाज में अच्छे नागरिक तैयार होंगे जो देश और समाज का गौरव बढ़ाते जायेंगे।''

- श्री नितिन गडकरी
तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा
वर्तमान केन्द्रीय सड़क परिवहन,
राजमार्ग एवं जहाजरानी मंत्री

''जगत के हित और प्यारों के कल्याण के लिए जिन्होंने यह देह धारण की है, ऐसे पूज्य बापूजी के चरणों में मैं प्रणाम करता हूँ। आपने जो कुछ बातें कही हैं, हम उनका पालन करेंगे।'' **- श्री शिवराज सिंह चौहान,**
मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

''महाराज पूज्य बापूजी ! आपका आशीर्वाद बना रहे क्योंकि मैं राज करने नहीं आयी, धर्म और कर्म को एक साथ जोड़कर मैं सेवा करने के लिए आयी हूँ और वह मैं करती रहूँगी। आप रास्ता बताते रहो और इस राज्यरूपी परिवार की सेवा करने की शक्ति देते रहो।

मैं मानती हूँ कि जब गुरु के साक्षात् दर्शन हो गये हैं तो कुछ बदलाव जरूर आयेगा, राज्य की समस्याएँ हल होंगी व हम लोग जनसेवा के काम कर सकेंगे।''

- वसुंधरा राजे सिंधिया
मुख्यमंत्री, राजस्थान

''हम सबका परम सौभाग्य है कि बापूजी के दर्शन हुए। आपसे आशीर्वाद मिला, मार्गदर्शन भी मिला। आपके आशीर्वाद व कृपादृष्टि से छत्तीसगढ़ में सुख-शांति व समृद्धि रहे। यहाँ के एक-एक व्यक्ति के घर में विकास की किरण आये।''

- डॉ. रमन सिंह, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

''बापूजी कितने प्रेमदाता हैं कि कोई भी व्यक्ति समाज में दुःखी न रहे इसलिए सतत प्रयत्न करते रहते हैं। जीवन की सच्ची शिक्षा तो हम भी नहीं दे पा रहे हैं, ऐसी शिक्षा तो पूज्य संत श्री आशारामजी बापू जैसे संतशिरोमणि ही दे सकते हैं।''

- श्रीमती आनंदीबहन पटेल
तत्कालीन शिक्षामंत्री,

"बापूजी की अमृतवाणी का विशेषकर मुझ पर तो बहुत प्रभाव पड़ता है। आपके दर्शनमात्र से ही मुझे एक अद्भुत शक्ति मिलती है। इस हिन्दुस्तान में अमन, शांति, एकता एवं भाईचारा बना रहे इसलिए पूज्य बापूजी से आशीर्वाद लेने आया हूँ।"

- श्री प्रकाश सिंह बादल, मुख्यमंत्री, पंजाब

"हमें आपके मार्गदर्शन की जरूरत है, वह सतत मिलता रहे। आपने हमारे कंधों पर जो जवाबदारी दी है, उसे हम भलीप्रकार निभायें। लोगों की, संस्कृति की अच्छे ढंग से सेवा करें। सत्य का मार्ग कभी न छूटे, ऐसा आशीर्वाद दो।"

- श्री उद्धव ठाकरे, अध्यक्ष, शिवसेना

श्री नरेन्द्रभाई मोदी और इनके सभी साथी देश का नाम बुलंदियों पर ले जायें, भारत में वैदिक संस्कृति का प्रकाश फैलायें। पूज्य बापूजी एवं महापुरुषों का भारत को विश्वगुरु बनाने का सत्यसंकल्प शीघ्र साकार हो।

(श्री आर.सी. मिश्र)

(पृ.१२ संत-सम्मेलन, जम्मू का शेष)

श्री फूलकुमार शास्त्रीजी, शिव-कथावाचक : हमारे हिन्दू समाज को तोड़कर ये षड्यंत्रकारी हिन्दुत्व को नष्ट कर देना चाहते हैं पर बापूजी ने उनके किये-कराये पर पानी फेर दिया, जो अपना धर्म छोड़कर गये थे उनको भी वापस लाने का प्रयत्न किया।

बापूजी निर्दोष हैं। जिन्होंने ६ करोड़ लोगों को सन्मार्ग दिखा दिया, व्यसनमुक्त कर दिया, असंख्यों की शराब छुड़ा दी, ऐसे संत कोई गलत कार्य कैसे कर सकते हैं!

श्री रघुनंदन प्रदीप शास्त्रीजी, गौ कथाकार : बापूजी ने हमें संदेश दिया कि गौ, गीता, गंगा, गायत्री का आदर व अनुसरण करें। उन्होंने हमें गौमाता से जोड़ा, क्यों ? क्योंकि हमारी संस्कृति का आधार गौमाता हैं। हम सारे वेद, सारे पुराण, सारे शास्त्र गा नहीं सकते इसलिए बापूजी ने हमें गीता से जोड़ा। हमें भगवन्नाम-मंत्र दिया और हमें कुलीनता, सज्जनता, वंदनीयता के साथ जोड़ा। ऐसे संस्कृति-रक्षक बापूजी बिल्कुल निर्दोष हैं।

गुरुपूर्णिमा पर गुरुदर्शन हेतु

गुरुपूर्णिमा का पावन पर्व आ रहा है। गुरुपूर्णिमा पर पूज्य बापूजी के दर्शन-सत्संग प्राप्त हों इस हेतु सभी साधक, भक्त बापूजी के आने तक दृढ़ता के साथ प्रतिदिन 'ॐ ॐ ॐ बापूजी जल्दी बाहर आओ !' का संकल्प व अधिक-से-अधिक जप करें।

किसान बन गया जोगी महान

जोगी गोरखनाथ

एक बार जोगी गोरखनाथ विचरण करते हुए घामा नगरी जा रहे थे। वहाँ उनका ध्यान एक किसान की ओर गया। गर्मी का मौसम था, भयंकर लू चल रही थी किंतु माणिक नामक वह किसान खेत में अथक रूप से परिश्रम में मग्न था। उसकी तत्परता एवं साहस को देखकर गोरखनाथजी उसके पास गये और बोले : ''कृषक ! यात्रा करने से मुझे भूख-प्यास का अनुभव हो रहा है। मेरे लिए कुछ जलपान की व्यवस्था कर सकते हो ?''

माणिक : ''बाबा ! मेरे पास कुछ सूखी रोटियाँ हैं, पात्र में जल भी है। यदि आप आज्ञा दें तो सेवा करूँ।''

गोरखनाथजी की स्वीकृति पाकर किसान प्रसन्न हो उठा। उसने अपने खाने की चिंता न करके बड़े भाव एवं प्रेमपूर्वक गोरखनाथजी को भोजन कराया।

गोरखनाथजी ने कहा : ''माणिक ! मैं तुम्हारी कर्मठता और श्रद्धा-भक्ति से प्रसन्न हूँ। तुम्हें जिस वस्तु की चाह हो, माँग लो।''

माणिक : ''नाथजी ! मुझे आपकी कृपा के सिवा और क्या चाहिए !''

जोगी गोरखनाथजी माणिक की ऊँची समझ, श्रद्धा, मन की निर्मलता देखकर खूब प्रसन्न हुए और दोनों हाथ ऊपर करके आशीर्वाद देते हुए कहा : ''तथास्तु।''

कैसे होते हैं आत्मपद में जगे हुए महापुरुष, कि जो बस मौके की ताक में होते हैं कि किस प्रकार और कब वे अपनी अहैतुकी कृपा हम पर बरसा सकें। आत्म-अमृत का सागर उनके हृदय में हिलोरें ले रहा होता है। वे तो छलकने का अवसर ढूँढ़ते रहते हैं, पात्र की खोज में भ्रमण करते रहते हैं।

आत्म-संतृप्त उन महापुरुष की आँखों से करुणा-कृपा बरस रही थी। अपने जीवन-रथ की बागड़ोर पूरी तरह सौंप देनेवाला ऐसा विरला महापात्र पाकर वे बोले : ''माणिक ! तू हृदय में बसनेवाले आत्मरत्न को खोज ले।''

गुरु गोरखनाथजी के मुख से निकले वचन किसान के निर्मल मन में गहरे उतर गये। उस दिन के बाद किसान अंतर्मुख होकर आत्मचिंतन में घंटों डूबा रहने लगा। उसका मन संसार से उपराम हो गया। आखिर वह घर छोड़कर आत्मरत्न की खोज में गहन वन में जा के साधना करने लगा। वह बहुत कम समय में इस स्थिति में पहुँच गया कि ध्यान में शरीर की भी सुध भूल जाता। परंतु यह भी एक स्थिति है, साधना का अंतिम लक्ष्य नहीं।

गोरखनाथजी भक्त के मार्गदर्शन हेतु वहाँ पहुँच गये। उन्होंने माणिक को दीक्षा दी तथा उसका नाम 'माणिकनाथ' रख दिया। गुरुआज्ञा-पालन में तत्पर माणिकनाथ ने बहुत ही कम समय में गुरु के कृपाप्रसाद से जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार कर लिया। धन्य हैं ऐसे सत्पात्र शिष्य और महाकरुणावान सद्गुरु ! ये ही सद्गुरु गोरखनाथजी अपने जीवन का निचोड़ बताते हुए हमें सजग करते हैं :

गोरख ! जागता नर सेविये।

'हे मानव ! जीवन सफल बनाने के लिए जीवित महापुरुष के सत्संग, दर्शन, सेवा, मार्गदर्शन का लाभ ले ले।'

गुरु-वचन जिनके लिए प्राणों से भी प्यारे हों और उनका अनुसरण ही जिनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य हो, ऐसे माणिक बहुत विरले होते हैं। वे ही इस दुनिया के सच्चे वीर हैं, पुरुषार्थी हैं। वे धरती के देव और सबके आदर्श हैं।

अनंत है गुरु की महिमा

- पूज्य बापूजी

गुरुपूर्णिमा के दिन गुरु का दर्शन, गुरु का पूजन वर्षभर की पूर्णिमाएँ मनाने का पुण्य देता है। दूसरे पुण्य के फल तो सुख देकर नष्ट हो जाते हैं लेकिन गुरु का दर्शन और गुरु का पूजन अनंत फल को देनेवाला है। इसीलिए संत कबीरजी ने कहा :

तीरथ नहाये एक फल, संत मिले फल चार।
सद्गुरु मिले अनंत फल, कहत कबीर विचार॥

वे संत अगर हमें दीक्षा देते हैं और हमारे सद्गुरु हैं तो फिर हमको अनंत फल होगा। जिस फल का अंत न हो ऐसा फल होता है गुरु के दर्शन, गुरु के सत्संग, गुरु की दीक्षा से। गुरुपूनम के दिन शिष्य गुरु के पास आते हैं तो वर्षभर जितनी प्रगति हुई उसमें फिर गुरु के सत्संग से कुछ-न-कुछ नयी दृष्टि, नयी युक्ति, आगे का पाठ मिल जाता है। जैसे पाँचवींवाला छठी में, छठीवाला सातवीं में, ऐसे ही साधक हर साल एक-एक कदम ऊपर बढ़ते हैं। इसलिए गुरु के चरणों में जाना जरूरी होता है। गुरुपूनम सर्वोपरि है क्योंकि यह मुक्तिदात्री है, कल्याणदात्री है। अन्य समय गुरु के द्वार न भी पहुँचो लेकिन गुरुपूनम को तो गुरु के द्वार जरूर पहुँचें और नहीं पहुँच सकते तो मानसिक रूप से भी गुरु से सम्पर्क करें, प्रगति होती है।

संत कबीरजी कहते हैं :

कबीर ते नर अंध हैं, गुरु को कहते और।
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर॥

जिसके जीवन में सद्गुरु नहीं हैं वह अभागा है। रामायण में आता है :

गुर बिनु भव निधि तरइ न कोई।
जौं बिरंचि संकर सम होई॥ (श्री रामचरित. उ.कां. : ९२.३)

ब्रह्माजी जैसी सृष्टि बनाने की ताकत हो और शंकरजी की नाईं प्रलय करने की ताकत हो फिर भी सद्गुरु के बिना जन्म-मरण के चक्कर से तुम पार नहीं हो सकते हो। इतनी महत्ता है गुरु की। शब्द में ताकत है लेकिन वह शब्द अगर दैवी शब्द है तो दैविक फायदे होते हैं, आध्यात्मिक शब्द है तो आध्यात्मिक फायदे होते हैं। यदि वह मंत्र है और गुरु ने विधिवत् दिया है तो उसके जप से जो फायदा होता है, उसका वर्णन हम-तुम नहीं कर सकते।

सद्गुरु मेरा शूरमा, करे शब्द की चोट।
मारे गोला प्रेम का, हरे भरम की कोट॥

संत तुलसीदासजी बोलते हैं :

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि। (श्री रामचरित. बा.कां. : ०.५)

मेरे गुरु मनुष्य के रूप में साक्षात् हरि हैं।
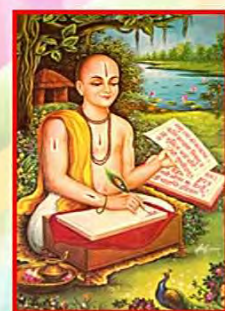
संत रज्जबजी गुरु दादूजी की प्रशंसा करते हुए कहते हैं :

गुरु दादू का ज्ञान सुन, छूटें सकल विकार।
जन रज्जब दुस्तर तिरहिं, देखैं हरि दीदार ।।

...उनकी कृपा से मुझे हरि का साक्षात्कार हुआ।

संत कबीरजी बोलते हैं :

गुरु हैं बड़े गोविन्द ते, मन में देखो विचार।
हरि सुमिरे सो वार है, गुरु सुमिरे सो पार ।।

जो गुरु का सुमिरन करते हैं वे पार हो जाते हैं।

मीराबाई ने कहा :

मेरो मन लागो हरि जी सूँ, अब न रहूँगी अटकी ।।
गुरु मिलिया रैदास जी,
दीन्हीं ज्ञान की गुटकी। (गुटकी = घूँट)

मुझे रैदासजी गुरु मिल गये हैं और उन्होंने मुझे ज्ञान के घूँट पिला दिये हैं। मेरा मन भगवान में लग गया है, अब मैं माया में नहीं अटकूँगी। दुःख में, अभिमान में फँसूँगी नहीं। ये सब आने-जानेवाले हैं।

सहजोबाई बहुत उच्च कोटि की आज्ञाकारी सत्शिष्या थीं। सहजोबाई कहती हैं :

हरि किरपा जो होय तो, नाहीं होय तो नाहिं।
पै गुरु किरपा दया बिनु, सकल बुद्धि बहि जाहिं ।।

हरि की कृपा हो तो हो, न हो तो कोई जरूरत नहीं लेकिन गुरुकृपा मिल जाती है तो बेड़ा पार हो जाता है। जब तक गुरु का ज्ञान नहीं मिलता है, तब तक सारी बुद्धियाँ बदलती रहती हैं। हरिकृपा मिलती है तब भी गुरुकृपा चाहिए पर गुरुकृपा मिल गयी तो किसीकी कृपा की जरूरत नहीं होती।

ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर, कार्य रहे ना शेष।
मोह कभी न ठग सके, इच्छा नहीं लवलेश ।।

जो अंतवाला है उसमें अनंत का दर्शन करा देती है गुरुकृपा। गुरुकृपा ऐसी है कि जड़ में चेतन का साक्षात्कार करा देती है, अनित्य में नित्य आत्मा से मिला देती है। शरीर नश्वर, धन नश्वर लेकिन गुरुकृपा इनमें से भी शाश्वत प्रकट कर देती है। गुरुकृपा की महिमा कोई पूरी नहीं गा सकेगा।

अजब राज है मोहब्बत के फसाने का।
जिसको जितना आता है,
उतना ही गाये चला जाता है ।।

जैसे भगवान के स्वरूप का वर्णन, भगवान की महिमा पूरी नहीं गा सकते, ऐसे ही भगवत्प्राप्त गुरु की महिमा भी पूरी कोई नहीं गा सकता।

ऐसे महामहिमावान गुरु को साधारण जड़ बुद्धिवाले लोग नहीं समझ सकते लेकिन सत्शिष्य सद्गुरु के प्रसाद से नर से नारायणरूप बनकर आनंद में मस्त रहता है।

पिछले अंक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर

(१) देवर्षि नारदजी (२) संत तुकारामजी (३) प्राण (४) क्रकच (५) आम

आप बुवाई करो

- पूज्य बापूजी

आज से सवा दो सौ वर्ष पहले की बात है। मारवाड़ के हरनामा ग्राम में जालम जाट के घर रानाबाई का जन्म हुआ। उसके गुरुजी का नाम था खोजीजी। गुरु, संत महाराज का दर्शन करने की सौभाग्य की घड़ियाँ आयीं। गुरुजी के दर्शन करके 'खोजीजी... बापजी... मोरा है बापजी...' - ऐसा करते-करते बापजी के हृदय में जो भगवान की भक्ति और ज्ञान था, वह रानाबाई के हृदय में स्फुरित हुआ। गुरुजी के सत्संग के प्रभाव से रानाबाई का पूरा जीवन भगवान की भक्ति से सम्पन्न हो उठा। वह जब शादी के काबिल हुई तो माँ-बाप ने बोला : ''तुम्हारी शादी करायें, कोई वर खोजें ?''

रानाबाई बोली : ''मैंने तो 'वर' वर लियो है। मैं तो वरूँ गोपाल को, मारो चूड़ो (चूड़ियाँ, भावार्थ - सुहाग) अमर हो जाय। मैं शादी नहीं करूँगी।''

लड़की के कहने में इतनी सच्चाई और बल था कि वह किसी लड़के के चक्कर में आये या पत्नी बने ऐसी सम्भावना नहीं थी। गुरु महाराज का दर्शन होता है, सत्संग सुनती है और गुरुजी के सत्संग में आत्मा-परमात्मा की ऐसी बात निकलती है कि रानाबाई भगवान के ध्यान में शांत हो जाती है। भगवान का नाम जपती है तो मानो 'वही मेरा अंतरात्मा प्रभु है।' इस प्रकार जप-ध्यान, सेवा-सुमिरन से रानाबाई ईश्वरीय शक्ति से सम्पन्न हो गयी।

एक समय जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के आदेश से बोरावड़ के ठाकुर राजसिंह ने अहमदाबाद पर चढ़ाई कर दी। उसने मन-ही-मन रानाबाई को प्रार्थना की कि 'रानाबाई ! मैं अहमदाबाद पर विजय प्राप्त करूँगा तो आपके यहाँ मत्था टेकूँगा, यह करूँगा...'

रानाबाई का, एक कन्या का पुण्य-प्रताप ऐसा कि ठाकुर राजसिंह उसकी मनौती मानता है और विजयी होकर उस बाई के चरणों में आता है, मत्था टेकता है। रानाबाई गोबर के कंडे थाप रही थी। ठाकुर राजसिंह ज्यों रानाबाई के चरणों में मत्था टेकता है, त्यों गोबरवाले हाथ से रानाबाई ने उसकी पीठ पर पंजा मार दिया : ''भला हो तेरा।'' लोगों ने देखा कि ठाकुर राजसिंह अहमदाबाद पर विजय प्राप्त करके आया और यह रानाबाई गोबरवाले हाथ से उसकी पीठ ठोंकती है ! लेकिन देखते-ही-देखते पीठ पर लगे गोबर का रंग केसरिया हो गया और केसर की सुगंध-सुगंध फैल गयी।

तो सभीके अंदर यह जो श्वासोच्छ्वास चलता है न, उसमें प्राणशक्ति और अपानशक्ति काम करती है। जब हम ऊँचे भाव करते हैं तो हमारी यात्रा ऊँची होती है। तो आप बुवाई करो। क्या बोयें ? विचार बोओगे तो कर्म बनेगा, कर्म बोओगे तो आदत बनेगी, आदत बोओगे तो चरित्र बनेगा और चरित्र बोओगे तो महाराज ! बनने-बिगड़ने से पार जो परमात्म-तत्त्व है उसमें विश्रांति मिल जायेगी। फिर कुछ बनोगे नहीं, जो तुम्हारा मूल है वहाँ पहुँच जाओगे। आप बीज बोते हैं न, तो बीज की प्राणशक्ति पौधे के ऊपरवाले भाग पत्ते-टहनियों तथा अपानशक्ति जड़ों के रूप में व्यापक हो जाती है। ऐसे ही आप हृदय में रहते हैं; अगर हलके विचार करते हैं तो काम, क्रोध, स्वप्नदोष, गंदी आदतों के शिकार होकर नीचे की तरफ जाते हैं और अगर सत्संग करते हैं और ऊँचे विचार करते हैं तो आप ऊँचे होते-होते... नरेन्द्र में से विवेकानंद बन जाते हैं, कबीर जुलाहे में से संत कबीरजी बन जाते हैं, शबरी भीलन में से महान शबरीबाई बन जाती है।

साधना का खजाना बढ़ाने का सुवर्ण अवसर : चतुर्मास

चतुर्मास में भगवान नारायण शेषशैया पर योगनिद्रा में विश्रांतियोग करते हैं। इन दिनों में मकान-दुकान बनाना, शादी-विवाह और सकाम मांगलिक कार्य करना वर्जित है। चतुर्मास में पति-पत्नी का सांसारिक व्यवहार न करने का व्रत लें तो आपका बल, बुद्धि, ओज और तबीयत अच्छी रहेगी। ब्रह्मचर्य व संयम से आपकी कांति बढ़ेगी। चरित्र की साधना - सत्य बोलना, हिंसा से बचना, मन और वचन से नीच कर्मों का त्याग करना - इससे आपके चतुर्मास में साधन-भजन में खूब बढ़ोतरी होगी।

संकल्प लें कि मौन रखेंगे, जप करेंगे, ध्यान करेंगे, नीच कर्मों का त्याग करेंगे। छल-कपट, झूठ आदि जिससे भी अंतरात्मा की अधोगति हो, उससे बचेंगे और जिससे भी आत्मोन्नति हो वह करेंगे।

चतुर्मास में बेईमानी के कामों से बचें और क्षमा के सद्गुण का विकास करें। इन्द्रियशक्ति बढ़ाने के लिए मन का संयम, कुसंग का त्याग करना और ॐकार की उपासना करके शांतमना होना। गुरुमूर्ति के सामने १५ से २५ मिनट रोज एकटक देखकर ॐ का दीर्घ गुंजन करना। इससे गुरुमूर्ति से गुरु प्रकट हो जायेंगे, बातचीत करेंगे, चाहोगे तो गुरुजी के साथ भगवान भी प्रकट हो जायेंगे।

हृदय को पवित्र करने के लिए परोपकार, दान, नम्रता, श्रद्धा, सर्वात्मभाव और भगवन्नाम सुमिरन है और मानसिक साधना है गीता का स्वाध्याय, रामायण का पाठ, सत्संग, आध्यात्मिक स्थान पर जाना आदि। गुरु से मानसिक वार्तालाप करने से, मानसिक जप करने से, श्वासोच्छ्वास के साथ जप और आत्मज्ञान का विचार करना... इन सरल साधनों से मन इतनी आसानी से पवित्र होता है कि और बड़ी-बड़ी तपस्याएँ भी इतनी तेजी से मन को पवित्र नहीं कर सकती हैं।

चतुर्मास में अपना दिल दिलबर की भक्ति से भरना यही मुख्य काम है। गाय की सेवा करना, गोदुग्ध का पान करना, गोमय (गोबर-रस) का उपयोग करना चतुर्मास में हितकारी है। सत्संग का आश्रय लेना, गुरु, देवता एवं अग्नि का तर्पण करना तथा दीपदान आदि करना चाहिए। 'स्कंद पुराण' में आता है कि 'पुण्यात्माओं के लिए गोभक्ति, गोदान, गौसेवा हितकारी हैं, सत्पुरुषों की सेवा हितकारी है।' चतुर्मास में पलाश की पत्तल में भोजन करना चान्द्रायण व्रत करने के बराबर है।

व्रत और उपवास अपने जीवन में छुपी हुई सुषुप्त शक्तियों को विकसित करते हैं। आरोग्य की साधना के लिए एक तो खानपान सात्त्विक और सुपाच्य हो, रजो-तमोगुणवाले पदार्थों का त्याग हो, दूसरा व्रत-उपवास, तीसरा आसन व प्राणायाम करे तो चतुर्मास की साधना का लाभ मिलेगा। प्राणशक्ति की साधना करनी हो तो श्वासोच्छ्वास की गिनती अथवा श्वास भीतर रोककर सवा या डेढ़ मिनट जप करे फिर बाहर रोक के ४०-५० सेकंड जप करे। इससे आपकी आरोग्य शक्ति, मानसिक शक्ति व बौद्धिक शक्ति विकसित होगी।

आध्यात्मिक साधना में आगे बढ़ना है तो सूर्योदय से दो घंटे पहले ब्राह्ममुहूर्त शुरू होता है, तब उठो या फिर चाहे

एक घंटा पहले उठो। उठने के समय भगवान का ध्यान करो कि 'प्रातःकाल हम उस परमात्मा का ध्यान करते हैं जो अंतरात्मा में, आत्मा से स्फुरित होता है और मन, बुद्धि को चेतना देता है।' सुबह नींद में से चटाक्-से मत उठो, पटाक्-से घड़ी मत देखो। नींद खुल गयी, आँख न खुले, थोड़ी देर पड़े रहो, 'ॐ शांति... प्रभु की गोद से मैं बाहर आ रहा हूँ। मेरा मन बाहर आये उससे पहले मैं फिर से मनसहित प्रभु के चरणों में जा रहा हूँ, ॐ शांति, ॐ आनंद...' ऐसा मन से दोहराओ। आपका हृदय बहुत पवित्र होगा। साधन बहुत सुंदर होगा। दिन में समय मिले तो कीर्तन करो। दैनंदिनी लिखो। जिससे गलती और पतन होता है उस बात को काटो और जिससे उन्नति होती है उधर ध्यान दो। इन्द्रियों को वश में करो, बुरी चीज को, बुरे कर्मों को करने से अपने को रोको। मन में दया, स्वभाव में मधुरता, वचनों में नम्रता - ये आपको जगत में प्रिय बना देंगे और यह संसार में जीने की कला है।

धर्म का पालन करें। 'स्व' है मेरा आत्मा - सच्चिदानंद, उसमें विश्रांति पायें और दूसरों के हित का काम करें। अपने धर्म के अनुरूप, अपने अधिकार के अनुरूप सेवा कर लें, झूठे झाँसे न दें और झूठी अपनी शेखी न बघारें। प्रसन्न रहें। नाक से लम्बा श्वास लें, भगवन्नाम जपें और मुँह से फूँक मारकर श्वास बाहर छोड़ दें, प्रसन्न रहने में सफल हो जाओगे।

भगवत्प्राप्ति जल्दी हो इसके लिए अध्यात्म-शास्त्रों का पठन और अध्यात्म-चिंतन करें, दुःख-सुख में सम रहें। दुःख आये तो 'मैं दुःखी हूँ' ऐसा न सोचें। 'दुःख होता है मन को, बीमारी होती है शरीर को, चिंता होती है चित्त को, मैं तो भगवान का हूँ और भगवान मेरे हैं। ॐ... ॐ...' - इस प्रकार की समझ बढ़ायें।

जिसने चतुर्मास में कोई व्रत-नियम नहीं किया, मानो उसने हाथ में आया हुआ अमृत-कलश ढोलने की बेवकूफी की। जैसे किसान चतुर्मास में खेती से धन-लाभ करता है, ऐसे ही आप इस चतुर्मास में भगवत्साधना करके आध्यात्मिक सुख, आध्यात्मिक ज्ञान व आध्यात्मिक सामर्थ्य का लाभ प्राप्त करो।

चतुर्मास में पुण्यदायी स्नान

एक बाल्टी में २-३ बिल्वपत्र डालकर 'ॐ नमः शिवाय' जप करते हुए स्नान करें तो तीर्थों में स्नान करने का फल हो जाता है। इससे वायु-प्रकोप दूर होता है, स्वास्थ्य की रक्षा होती है और आदमी दोषमुक्त, पापमुक्त होता है। थोड़े जौ और तिल मिक्सर से पीस के रख दें। इस मिश्रण से शरीर को रगड़कर स्नान करें तो वह पुण्यदायी स्नान माना जाता है।

दुर्बल कौन है ? - पूज्य बापूजी

कुछ मंदमति लोग कहते हैं कि श्रद्धा और भगवान का रास्ता थके, हारे और कमजोर लोगों का है लेकिन शास्त्र कहते हैं कि जिसको नहीं देखा उसको मानना यह कमजोरी नहीं है, यह तो परम बल है। जिसको देखा नहीं है, अनुभव किया नहीं है, उसके (भगवान के) लिए भोग-वासना, विषय-विकार छोड़ना, उसके नाममात्र से छोड़ने लग जाना, इतना त्याग, ज्ञान और हिम्मत है, यह कमजोरों का मार्ग नहीं है, बलवानों की पराकाष्ठा में पहुँचे हुए लोग ही परमात्मा को पा सकते हैं।

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः। (मुण्डकोपनिषद् : ३.२.४)

दुर्बलों को आत्मा-परमात्मा का रास्ता नहीं मिलता और परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती। दुर्बल तो वह है जो कुछ देखे और उस पर लपक जाय... चाट आदि देखे तो मुँह में पानी आ जाय, किसीकी पत्नी देखे तो विकार आ जाय, डिस्को करने लग जाय। वे दुर्बल लोग हैं जो अपने को सँभाल नहीं सकते। जो श्रद्धा नहीं कर सकते हैं वे दुर्बल हैं। लेकिन जो श्रद्धा के बल से विकारों को कुचलकर परमात्मा के रास्ते चल सकते हैं, उनको दुर्बल कहना ही मति की दुर्बलता है। कुछ मूर्ख लोग बक लेते हैं या लिख देते हैं, इससे सत्य पर कोई आँच आनेवाली नहीं है।

जैसी होवे पात्रता वैसी पावे गुरुकृपा

- पूज्य बापूजी

बारिश वही-की-वही लेकिन सीपी में बूँद पड़ती है तो मोती हो जाती है और खेत में पड़ती है तो भिन्न-भिन्न अन्न, रस हो जाती है और वही पानी गंगा में पड़ता है तो गंगा माता होकर पूजा जाता है, वही पानी नाली में पड़ता है तो उसकी कद्र नहीं, बेचारा कहीं-का-कहीं धक्के खाता है। ऐसे ही गुरुओं का ज्ञान यदि नाली जैसे अपवित्र हृदय में, अपवित्र वातावरण में निकल आये तो उसका फिर वही हाल हो जाता है। अर्जुन जैसे पवित्र व्यक्ति के आगे 'गीता' निकली है तो आज तक पूजी जाती है। शिशुपाल के सामने 'गीता' नहीं निकल सकती, 'गीता' निकलने के लिए अर्जुन चाहिए। 'श्री योगवासिष्ठ महारामायण' बनने के लिए रामजी चाहिए। कबीरजी का ग्रंथ 'बीजक' बनने के लिए शिष्य सलूका और मलूका चाहिए। तो सामने जैसे पात्र होते हैं, जैसी उनकी योग्यता होती है, गुरुओं के दिल से भी उसी प्रकार का ज्ञानोपदेश निकलता है।

कैसी हो हमारी पात्रता ?

अपनी श्रद्धा, अपना आचरण ऐसा होना चाहिए कि भगवान भी हम पर भरोसा करें कि यहाँ कुछ देने जैसा है, गुरु को भी भरोसा हो कि यहाँ कुछ देंगे तो टिकेगा। गुरु और भगवान तो देने के लिए उत्सुक हैं, लालायित हैं लेकिन लेनेवाले की तैयारी चाहिए। ईश्वर को भरोसा हो जाय इस उद्देश्य से ऐसा कोई बाह्य व्यवहार नहीं करना है क्योंकि ईश्वर तो हमारा बाहर का व्यवहार नहीं देखते, हमारी गहराई जानते हैं।

ईश्वर तो हम पर बड़े करुणाशील हैं, ईश्वर तो अंतर्यामी हैं। दूसरे को तो हम धोखा दे सकते हैं कि 'हमारी तुम पर श्रद्धा है, हम तो तुम्हारे बिना मर रहे हैं, हम तो जन्म-जन्म के साथी होंगे...' ऐसे पति-पत्नी को धोखा दे सकते हैं लेकिन ईश्वर को तो धोखा नहीं दे सकते।

जिनको लगन होती है ईश्वर के लिए वे प्रतिकूल परिस्थितियों को भी सहकर ईश्वर के रास्ते चलते हैं और विपरीत परिस्थिति में भी यदि ईश्वर के लिए धन्यवाद निकले तो ईश्वर और खुश होते हैं, और दे देते हैं।

श्रीकृष्ण के अतिथि बने सुदामा का लौटते समय जब श्रीकृष्ण ने दुशाला भी ले लिया तो सुदामाजी सोचते हैं कि 'भगवान कितने दयालु हैं ! मैं धन-दौलत में, माया में कहीं फँस न जाऊँ, मेरा मनुष्य-जन्म व्यर्थ न चला जाय इसलिए भगवान ने मुझे कुछ नहीं दिया। दुशाला उढ़ाया था, वह भी वापस ले लिया। वाह ! वाह ! कितने दयालु हैं !' और

जब घर पहुँचकर देखते हैं कि धन-धान्य, ऐश्वर्य से सम्पन्न हुई अपनी पत्नी सुशीला महारानी बन गयी है तो कहते हैं कि ''वाह भगवान ! तू कितना दयालु है ! मेरा कहीं भजन न छूट जाय, खान-खुराक, रहन-सहन की तकलीफों के कारण शायद मेरा मन उन चीजों के चिंतन में न चला जाय इसलिए तूने रातों-रात इतना सारा दे दिया !'' ये भक्त हैं ! विश्वास सम्पादन कर लिया ईश्वर का। उस वक्त तो वे सुख-सम्पत्ति से जिये ही, साथ ही वैष्णव जनों के लिए सदा के लिए दृष्टांत बन गये।

केवल पात्र बनो, गुरुकृपा में देरी नहीं

तुम केवल विश्वासपात्र बनो तो ऐसे ही कृपा, प्रेम, ज्ञान - सब चीजें तुम्हारे पास खिंच के चली आयेंगी। तुम उसके योग्य बनो तो वस्तुओं को खोजना नहीं पड़ेगा, वस्तु माँगनी नहीं पड़ेगी, वह वस्तु तुम्हारे पास आ ही जानी चाहिए। तुम ईश्वर के दर्शन के योग्य बनते हो तो फिर तुमको ईश्वर का दर्शन हो ऐसी इच्छा करने की भी जरूरत नहीं है, ऊपर से डाँट दो कि 'तेरे दर्शन की कोई जरूरत नहीं है, वहीं बैठा रह...' तो भी तुम्हारी योग्यता होगी तो वह आ ही जायेगा।

दीया जलता है, अपनी बत्ती और तेल खपाता है तो ऑक्सीजनवाली हवाएँ भागकर उसके करीब आ जाती हैं। ऑक्सीजन के लिए दीये को कोई चिल्लाना नहीं पड़ता, वह अपना काम किये जा रहा है। उसको जो चाहिए वे चीजें आ ही जाती हैं। जब ऐसे जड़ दीये की उस परमात्मा ने व्यवस्था कर रखी है, उसे सुयोग्य व्यवस्था मिल जाती है तो आपको नहीं देगा क्या ! बच्चा माँ के गर्भ में होता है, ज्यों जन्म लेता है त्यों दूध मिल ही जाता है और जब बच्चा अन्न खाने के काबिल हो जाता है तो वह दूध बंद हो जाता है। प्रकृति में तो स्वचालित व्यवस्था है। ईश्वर और सद्गुरु कोई शिष्टाचार में जरा पीछे पड़े हैं, ऐसे नहीं हैं। देनेवाला देने को बैठता है न, तो लेनेवाला थकता है, देनेवाला नहीं थकता आध्यात्मिक जगत में।

ऐसा जरूरी नहीं है कि जिसके साथ आप अच्छा व्यवहार करते हो, बदले में वह आपका भला करे। भगवान के वे ही दो हाथ नहीं हैं, हजारों-हजारों हाथों से वे लौटा सकते हैं। जिनसे तुमने भलाई की है, उन सबने भी भले तुमसे बुराई कर दी फिर भी तुम खिन्न मत हो, उद्विग्न मत हो, निराश मत हो क्योंकि इतने ही भगवान के हाथ नहीं हैं। मेरे भगवान के तो अनंत हाथ हैं, न जाने किसके द्वारा दे, किसी बाहर के हाथ से नहीं दे तो भीतर से शांति तो मिलती है, भीतर से धन्यवाद तो मिलता है कि 'हमने भलाई की है, चाहे वह बुराई कर दे तो कोई हरकत नहीं।'

पात्रता का मापदंड रखते हैं सद्गुरुदेव

कच्चे घड़े में पानी ठहरता नहीं, कच्चा घड़ा पानी डालने के पात्र नहीं होता है। अब पानी डालना है तो उसे आँवें में (कुम्हार की भट्ठी में) डालना पड़ता है, बाहर निकालने पर टकोर करनी पड़ती है। कुम्हार रखता है दुकान पर तो वह भी टकोर करता है, उसका नौकर भी टकोर करता है, ग्राहक लेता है तो वह भी टकोर करता है, घर ले जाता है तो घरवाली भी टकोर करती है।

बह जाने और सूख जाने वाला पानी जिस घड़े में डालते हो, उसको कितना कसौटी पर कसते हो ! तो जो कभी न बहे और कभी न सूखे, ऐसे ब्रह्मज्ञान का अमृत किसीमें कोई डालना चाहे तो वह भी तो अपने ढंग की थापी तो रखता ही होगा, सीधी बात है ! हमें दिखें चाहे न दिखें, उनके पास होती हैं वे कसौटियाँ।

माँ-बाप बच्चे को डाँटते या मारते हैं तो उनकी डाँट, मार या प्यार के पीछे बच्चे का हित और करुणा ही तो होती है, और क्या होता है ! ऐसे ही परमात्मा हमको किसी भी परिस्थिति से गुजारता है तो उसकी बड़ी करुणा है, कृपा है। लेकिन यदि हमारे भीतर से धन्यवाद नहीं निकलता और कुछ प्रतिक्रिया निकलती है तो हमारे कषाय अपरिपक्व हैं। सुदामा की नाईं जब धन्यवाद निकलने लगें तो समझो कि कषाय परिपक्व हो रहे हैं।

साधक जब ध्यान-भजन में होता है, परमात्मा के चिंतन में होता है तो उसे देखकर सद्गुरु के चित्त से कृपा बहती है, आशीर्वाद निकलता है। और जब गपशप में, इधर-उधर में होता है और गुरु देखते हैं तो गुरु के दिल से निकलता है कि 'ये क्या करेंगे !...' तो बहुत आदमी फिर नीची अवस्था में हो जाते हैं। लगन व उत्साह से पढ़नेवाले विद्यार्थी को देखकर शिक्षक का उत्साह बढ़ता है और लापरवाह व टालमटोल करनेवाले विद्यार्थी को देखकर शिक्षक का उत्साह भंग हो जाता है। अपने ही आचरण का फल विद्यार्थी को प्राप्त होता है। इससे भी बहुत ज्यादा असर सद्गुरुओं के चित्त का पड़ता है शिष्य के ऊपर।

गुरु का हृदय तो शुद्ध होता है न, इसीलिए हमारा व्यवहार, हमारी भक्ति सब बढ़िया-बढ़िया देखते-देखते वे हमारे लिए बढ़िया बोलने लगते हैं, बढ़िया सोचने भी लगते हैं तो हम बढ़िया हो भी जाते हैं। और हमारा घटिया आचरण देखकर, बेवफाई का (शेष पृ. १९ पर)

घर में सुख-सम्पदा व बरकत का अचूक उपाय

सुबह जब घर में भोजन बने तो सबसे पहलेवाली रोटी अन्य रोटियों से थोड़ी बड़ी बनायें और इसे अलग निकाल लें। इस रोटी के चार बराबर टुकड़े कर लें और इन चारों पर कुछ मीठा जैसे - खीर, गुड़ या शक्कर रख दें।

सबसे पहले एक टुकड़ा गाय को खिला दें और भगवान से प्रार्थना करें। धर्मग्रंथों के अनुसार गाय में सभी देवताओं का निवास होता है इसलिए सबसे पहले रोटी गाय को ही दी जाती है।

फिर दूसरा टुकड़ा कुत्ते को खिला दें। 'शिव पुराण' के अनुसार 'कुत्ते को रोटी खिलाते समय बोलना चाहिए कि 'यमराज के मार्ग का अनुसरण करनेवाले जो श्याम और शबल नाम के दो कुत्ते हैं, मैं उनके लिए यह अन्न का भाग देता हूँ। वे इस भोजन को ग्रहण करें।' इसे श्वानबलि कहते हैं।' रोटी के तीसरे भाग को कौओं को खिला दें और बोलें : 'पश्चिम, वायव्य, दक्षिण और नैर्ऋत्य दिशा में रहनेवाले जो पुण्यकर्मा कौए हैं, वे मेरे इस दिये हुए भोजन को ग्रहण करें।' इसे काकबलि कहते हैं। अब रोटी का अंतिम टुकड़ा एवं कुछ अन्न घर पर आये किसी भिक्षु को दे दें।

यह छोटा-सा उपाय रोज करने से आपको औदार्य सुख (उदारता का सुख) मिलेगा और आपकी किस्मत कुछ ही दिनों में बदल जायेगी।

स्वास्थ्य व दीर्घायु हेतु सरल उपाय

सूर्योदय के समय जठराग्नि तथा पाचक ग्रंथियाँ सक्रिय होती हैं और सूर्यास्त के समय मंद पड़ जाती हैं। सूर्यास्त के पूर्व भोजन करने से श्वास व हृदय संबंधी रोग, वायुविकार, अजीर्ण तथा अनिद्रा आदि रोग नहीं होते। रात्रि के समय भोजन करने से अनेक रोग हो जाते हैं। यदि प्राणी पहले ही रोगी है और रात का भोजन देर से करता है तो रोग की उग्रता बढ़ जाती है। अतः रोगी-निरोगी सभीके लिए देर रात्रि का भोजन त्याज्य है।

(पृ.१९ 'जैसी होवे पात्रता...' का शेष)

आचरण देखकर वे विश्वास खोते जाते हैं तो हम भी ऐसे ही होते जाते हैं। और सद्गुरु को तो केवल तुम्हारे बाहर के व्यवहार से भरोसा नहीं होगा, वे तो तुम्हारे भीतर की सोच को भी जान लेंगे। इसीलिए हमारी निष्ठा व प्रीति ऐसी हो कि भगवान और गुरु को हमारे प्रति भरोसा हो जाय बस, कि 'ये मेरा सत्पात्र है।' भगवान शिव माता पार्वतीजी से कहते हैं :

आकल्पजन्मकोटीनां यज्ञव्रततपः क्रियाः।
ताः सर्वाः सफला देवि गुरुसंतोषमात्रतः॥

हमारे करोड़ों जन्मों के यज्ञ, व्रत, जप-तप आदि उसी दिन सफल हो गये जिस दिन गुरुजी हमारे आचरण से, हमारी ईमानदारी से, हमारी वफादारी से संतुष्ट हो गये। गुरु को लगे कि पात्र है, तब गुरु के हृदय से कृपा छलकती है और शिष्य को हजम होती है।

पुण्यदायी तिथियाँ

२३ जून : योगिनी एकादशी (८८ हजार ब्राह्मणों को भोजन कराने का फल देनेवाला तथा महापापों को शांत करनेवाला व्रत)

२९ जून : रविपुष्यामृत योग (सुबह ८-५९ से ३० जून सूर्योदय तक), भगवान जगन्नाथ रथयात्रा

१ जुलाई : मंगलवारी चतुर्थी
(सूर्योदय से रात्रि १०-२५ तक)

९ जुलाई : देवशयनी एकादशी (पापों को हरनेवाला, महान पुण्यमय तथा स्वर्ग व मोक्ष प्रदान करनेवाला व्रत)

१२ जुलाई : गुरुपूर्णिमा, व्यासपूर्णिमा,
संन्यासी चतुर्मासारम्भ, ऋषि प्रसाद जयंती

१५ जुलाई : मंगलवारी चतुर्थी
(सूर्योदय से रात्रि २-३० तक)

१६ जुलाई : संक्रांति
(पुण्यकाल : सूर्योदय से सूर्यास्त तक)

अफसर से बन गये सदा मौजूद

- पूज्य बापूजी

एक मुसलमान फकीर बड़े प्रसिद्ध हो गये। दूर-दूर के लोग उनके पास आते थे। उनका जीवन-चरित्र लिखनेवाले भी कुछ आये और पूछा : ''आप इतने महान कैसे बने ?''

बोले : ''ऐसे ही हो गया 'मौजूद'।''

शेख मौजूद उनका नाम था।

बोले : ''मैं सरकारी अमलदार था और एक दिन किसी फकीर ने आकर कहा : ''अरे, खुशनसीब ! बड़ी चैन की जिंदगी गुजारता है ! लेकिन मौत आ जायेगी तो क्या करेगा ? छोड़ दे चैन को, ऐश-आराम को। नौकरी के पैसे भी मिलते हैं और ऊपर के भी बहुत मिलते हैं। छोड़ दे सब। ३ दिन के बाद मैं आता हूँ।''

कई लोगों ने मुझे मना किया लेकिन मैंने फकीर की बात रखी, मैंने त्यागपत्र दे दिया। ३ दिन के बाद वे संत आये और बोले : ''अपने कपड़े फाड़ डाल और कूद जा नदी में । बहाव तेज है तो क्या हुआ ? कोई तुम्हें शायद बचा ले।''

मैंने कपड़े फाड़ दिये और कूद गया। मैं जीवन और मौत के बीच झूल रहा था। इतने में एक मछुआरे ने मेरे को पकड़ लिया, अपनी नाव में खींच लिया और बहुत डाँटा कि ''पागल से भी गया बीता है।''

वह पढ़ा-लिखा नहीं था और मैं मच्छी मारना नहीं जानता था। उसने मुझे अपना धंधा सिखाया, मैंने उसको अपनी विद्या सिखायी। मछुआरे के साथ कई महीने रहा। फिर वे फकीर आये और बोले : ''अब आगे बढ़।'' इतना बोलकर वे अदृश्य हो गये। मैं आगे चला गया। जाते-जाते एक किसान से परिचय हो गया। किसान के यहाँ रहा, दो साल गुजारे। संत फिर आये और बोले : ''छोड़ अब इस काम को और शहर चला जा, वहाँ जाकर व्यापार कर।''

मैंने आज्ञा मानकर शहर में जानवरों की खाल बेचने का धंधा तीन साल तक किया और पैसे भी खूब कमाये। जब मैं मकान बनाने को सोच रहा था तो वे फकीर फिर आये और बोले : ''कितने दिन की जिंदगी है ? मकान क्या बनाना है ? 'मौजूद' में जा, 'मौजूद' में। ला, पैसे मुझे दे दे और यहाँ से निकलकर समरकंद चला जा। वहाँ एक पंसारी के यहाँ काम कर।''

मैंने सब पैसे दे दिये और समरकंद की ओर चल पड़ा। इस प्रकार अपनी अकड़-पकड़ छोड़कर मुर्शिद की आज्ञा में चलते रहने से कुछ ही दिनों में मुझे अनुभव हुआ कि सब 'मौजूद-ही-मौजूद' है। जिसको हम छोड़ नहीं सकते वही अल्लाह है। जो सदा मौजूद है वही अल्लाह है और मैं उसीके नाते जो भी बोलता हूँ उससे लोगों का भला हो जाता है, वह सत्संग हो जाता है।''

मैं तुमको इस बात पर और तसल्ली दिलाता हूँ कि चमड़ा बेचने का तीन साल का धंधा तुमको नहीं करना पड़ेगा, गधेवाले किसान के यहाँ गधा-मजूरी नहीं करनी पड़ेगी, मछुआरे के साथ मच्छी मारने को जाना नहीं पड़ेगा; तुमको तो मैं ऐसा पैकेज (सरल कुंजियाँ) देता हूँ कि हँसते-खेलते भगवान का अनुभव हो जाय।

कालसर्पयोग से मुक्ति का सरल उपाय

- पूज्य बापूजी

किसी पर कालसर्पयोग होता है तो बेचारा मुसीबतों में आ जाता है लेकिन जो मेरे शिष्य हैं उन्हें कालसर्पयोग की विदाई करने के लिए कोई पूजा-पाठ या लम्बा-चौड़ा विधि-विधान नहीं कराना है केवल 'कालसर्पयोग निवृत्ति अर्थे जपे विनियोगः।' ऐसा विनियोग करके अपने गुरुमंत्र की माला जपो और गुरुजी को देखो। ७ दिन रोज ११-११ माला जप करो। कालसर्पयोग कट जाता है।

मासानुसार गर्भिणी परिचर्या

हर महीने में गर्भ-शरीर के अवयव आकार लेते हैं, अतः विकासक्रम के अनुसार हर महीने गर्भिणी को कुछ विशेष आहार लेना चाहिए।

पहला महीना : गर्भधारण का संदेह होते ही गर्भिणी सादा मिश्रीवाला सहज में ठंडा हुआ दूध पाचनशक्ति के अनुसार उचित मात्रा में तीन घंटे के अंतर से ले अथवा सुबह-शाम ले। साथ ही सुबह १ चम्मच ताजा मक्खन (खट्टा न हो) ३-४ बार पानी से धोकर रुचि अनुसार मिश्री व १-२ काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर ले तथा हरे नारियल की ४ चम्मच गिरी के साथ २ चम्मच सौंफ खूब देर तक चबाकर खाये। इससे बालक का शरीर पुष्ट, सुडौल व गौरवर्ण का होगा।

इस महीने के प्रारम्भ से ही माँ को बालक में इच्छित धर्मबल, नीतिबल, मनोबल व सुसंस्कारों का अनन्य श्रद्धापूर्वक सतत मनन-चिंतन करना चाहिए। ब्रह्मनिष्ठ महापुरुषों का सत्संग एवं उत्तम शास्त्रों का श्रवण, अध्ययन, मनन-चिंतन करना चाहिए।

दूसरा महीना : इसमें शतावरी, विदारीकंद, जीवंती, अश्वगंधा, मुलहठी, बला आदि मधुर औषधियों के चूर्ण को समभाग मिलाकर रख लें। इनका १ से २ ग्राम चूर्ण २०० मि.ली. दूध में २०० मि.ली. पानी डाल के मध्यम आँच पर उबालें, पानी जल जाने पर सेवन करें।

तीसरा महीना : इस महीने में दूध को ठंडा कर १ चम्मच शुद्ध घी व आधा चम्मच शहद (अर्थात् घी व शहद विषम मात्रा में) मिलाकर सुबह-शाम लें।

उलटियाँ हो रही हों तो अनार का रस पीने तथा 'ॐ नमो नारायणाय' का जप करने से वे दूर होती हैं।

चौथा महीना : इसमें प्रतिदिन १० से २५ ग्राम मक्खन अच्छे-से धोकर, छाछ का अंश निकाल के मिश्री के साथ या गुनगुने दूध में डालकर अपनी पाचनशक्ति के अनुसार सेवन करें।

इस मास में बालक सुनने-समझने लगता है। बालक की इच्छानुसार माता के मन में आहार-विहार संबंधी विविध इच्छाएँ उत्पन्न होने से उनकी पूर्ति युक्ति से (अर्थात् अहितकर न हो इसका ध्यान रखते हुए) करनी चाहिए।

यदि गर्भाधान अचानक हो गया हो तो चौथे मास में गर्भ अपने संस्कारों को माँ के आहार-विहार की रुचि द्वारा व्यक्त करता है। आयुर्वेद के आचार्यों का कहना है कि यदि इस समय भी हम सावधान होकर आग्रहपूर्वक दृढ़ता से श्रेष्ठ विचार करने लगें और श्रेष्ठ सात्त्विक आहार ही लें तो आनेवाली आत्मा के खुद के संस्कारों का प्रभाव कम या ज्यादा हो जाता है अर्थात् रजस, तमस प्रधान संस्कारों को सात्त्विक संस्कारों में बदला जा सकता है एवं यदि सात्त्विक संस्कारयुक्त है तो उस पर उत्कृष्ट सात्त्विक संस्कारों का प्रत्यारोपण किया जा सकता है। (क्रमशः)

यही तुम्हारा उद्देश्य हो

- पूज्य बापूजी

राजा दशरथ जिनकी चरणरज लेकर अपना भाग्य बनाते हैं, रामचन्द्रजी जिनको प्रणाम करके अपना आदर्श व्यक्त करते हैं, ऐसे वसिष्ठजी के लिए भी कुछ लोग कुछ-की-कुछ अफवाह कर सकते हैं तो तुम्हारे लिए कोई कुछ बोले तो तुम फिक्र मत करना। तुम्हारे सद्गुरु के लिए कोई कुछ बोले तो उनके चक्कर में मत आना, तुम तो चौरासी के चक्कर को हटाकर आत्मस्थ होना, यही तुम्हारा उद्देश्य हो।

गुरु बिन कौन उतारे पार ?

चाहे प्रकृति में परिवर्तन हो जाय और सूर्य तपना छोड़ दे, चन्द्रमा शीतलतारहित हो जाय, जल बहना त्याग दे, दिन की रात और रात का दिन क्यों न हो; एक बार हुई गुरुकृपा व्यर्थ नहीं जाती। यह कृपा शिष्य के साथ-साथ जन्म-जन्मांतरों में भी रहती है। इसीलिए आप धैर्य से, उत्साह से, प्रेम से अभ्यास करते रहें।

- स्वामी मुक्तानंदजी

जो शिष्य गुरु के वचनों में दृढ़ भाव रखता है, वह स्वयं देवाधिदेव (सद्गुरु) बन जाता है। *- समर्थ रामदासजी*

जैसे एक नेत्र से दूसरा नेत्र कुछ भी दूर नहीं है तो भी बिना दर्पण के एक नेत्र दूसरे नेत्र को नहीं देख सकता, वैसे ही आत्मा और ब्रह्म में कुछ भी भेद नहीं है तो भी सद्गुरु-ज्ञान बिना आत्मा ब्रह्म को नहीं देख सकता। जब सद्गुरु अंतःकरणरूप हाथ में ज्ञान-दर्पण देते हैं, तब आत्मा ब्रह्म का साक्षात्कार करके उसीमें अभेद हो जाता है।

- संत दादू दयालजी

यदि गुरु-पिता न मिले तो जन्म होने पर भी नहीं होने के समान ही है क्योंकि गुरु द्वारा परमात्मा की प्राप्ति के लिए ही मनुष्य-जन्म है। गुरु प्राप्त न हुए तो नर-जन्म निष्फल है। *- संत रज्जबजी*

आंतरिक मार्ग की रुकावटें और कठिनाइयाँ अति सूक्ष्म और जटिल हैं, इसलिए सिर्फ ऐसा कामिल मुर्शिद (सद्गुरु) ही इस राह पर जीव की रहनुमाई कर सकता है, जो खुद रास्ता तय करके मंजिल पर पहुँच चुका हो।

- बाबा शेख फरीद

जैसे हाथी स्वप्न में शेर को देखनेमात्र से नींद से जाग जाता है, वैसे ही शिष्य गुरु की कृपादृष्टि से अज्ञानरूपी नींद से सत् ज्ञान में जाग जाता है। *- श्री रमण महर्षि*

गुरु के समान नहीं,
दूसरा जहान में ॥
गुरु ब्रह्मरूप जानो,
शिव का सरूप जानो।
साक्षात् विष्णु जानो,
लिखा वेद पुराण में ॥
यही सुरति१ वेद कहता, गुरु बिन ज्ञान कैसा।
गुरु बिन आवे नहीं, सुरति तेरे ध्यान में ॥
छल कपट त्याग दीजौ, गुरुजी की सेवा कीजौ।
गुरुजी के चरण लीजो, खुल खेलो मैदान में ॥
ज्ञान तो बतावे गुरु, पाप से बचावे गुरु।
हरि से मिलावे गुरु, तुरियापद२ के ध्यान में ॥
निज नाम हृदय रख लो, भवसिंधु से पार उतर लो।
कहे रविदास पहुँच गये, बैठकर विमान में ॥

- संत रविदासजी

हमें गुरु की पूजा ईश्वर के रूप में करनी चाहिए, वे ईश्वर हैं । ईश्वर से जरा भी कम नहीं हैं । ज्यों-ज्यों आप उनको देखते जाते हैं, त्यों-त्यों धीरे-धीरे गुरु अदृश्य हो जाते हैं और ईश्वर ही बच जाते हैं, गुरु के चित्र के स्थान पर ईश्वर आ जाते हैं । ईश्वर ही हमारे पास आने के लिए गुरु का तेजोमय मोहरा पहनते हैं । ज्यों हम स्थिर दृष्टि से देखते हैं, त्यों मोहरा गिर जाता है और ईश्वर प्रकट हो जाते हैं ।

- स्वामी विवेकानंदजी

गुरु तो बहुत मिल सकते हैं लेकिन सद्गुरु इस धरती पर कभी-कभी, कहीं-कहीं मिल पाते हैं । सद्गुरुओं की महिमा अनेक ऋषि-मुनियों, संतों-महापुरुषों ने गायी है, गा रहे हैं और गाते ही रहेंगे फिर भी उनकी महिमा का कोई अंत नहीं, कोई पार नहीं ! ऐसे पवित्र महापुरुषों की अनुकम्पा व उनके पुण्य-प्रताप से ही पृथ्वी पावन होती रही है ।

जिसने एक बार भी सद्गुरु को पूर्ण संतुष्ट कर लिया, उसे फिर किसीको रिझाना बाकी नहीं रहता, कहीं जाना बाकी नहीं रहता, गुरु ऐसे तत्त्व में उसे जगा देते हैं । *- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू*

१. स्मरण २. परमात्म-पद

संतों को बदनाम करनेवालों पर कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए

- श्री ब्रजमोहनदासजी, दशरथ गद्दी चौबुर्जी मंदिर (अयोध्या) के महंत एवं विभाग संरक्षक, विश्व हिन्दू परिषद, अयोध्या

आज हिन्दू समाज को तोड़ने और बिखेरने के लिए संतों-धर्माचार्यों को कत्ल के अपराध में, बलात्कार के अपराध में, तमाम ऐसे अपराधों में फँसाकर बदनाम करने के षड्यंत्र चल रहे हैं । शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी के ऊपर हत्या का आरोप लगाया गया । सनातन धर्म पर जो कुठाराघात हो रहे थे, हिन्दुओं को ईसाई बनाया जा रहा था, उस षड्यंत्र को तोड़ने का बापूजी ने जो कार्य किया, उसका नतीजा यह है कि आज उनके ऊपर दुष्कर्म का झूठा आरोप लगवाकर उन्हें जेल में डाल दिया गया । इससे हम संत-महंतों में काफी आक्रोश, पीड़ा है, दर्द है । संत आशारामजी जो इतने बड़े संत हैं, जिनके इतने अनुयायी हैं, जो इतने बड़े स्तर पर देश की सेवा करते हैं, जो समाज में अच्छे संस्कार सींचते आये हैं, समाज की रक्षा करते हैं, गरीबों का उत्थान व धर्म की रक्षा कर रहे हैं, आज उन्हींके ऊपर इतनी बड़ी साजिश करके उनको बदनाम करने का निंदनीय कार्य किया जा रहा है । यह हिन्दू समाज को तोड़ने का कार्य है । इसका सभीको विरोध करना चाहिए ।

बापू को ससम्मान रिहा करो

- श्री श्यामानंदजी महाराज (करपात्रीजी महाराज के शिष्य) संस्थापक, जिज्ञासु विचार मंच, प्रयागराज

आज हमारी संस्कृति और समाज में फूट डालनेवाली तमाम ऐसी शक्तियाँ हैं जो समाज को भ्रमित करने में लगी हैं । कुछ बिकाऊ मीडिया हमारे धर्म और संस्कृति को सर्वमूल से मिटाने का कार्य कर रहा है । होता कुछ और है, और मीडिया दिखाता कुछ और है । मीडिया संत आशारामजी बापू के बारे में कपोलकल्पित खबरें दिखाकर उनको बदनाम करने में लगा है । हमारे संत-समाज में बापू जैसे अवतारी संत का प्रादुर्भाव हुआ, हम सब कृतकृत्य हैं । मैं सरकार से अपील करता हूँ कि हमारे संत श्री आशारामजी बापू पर लगा गये जितने भी आरोप हैं, उनको हटाते हुए उन्हें ससम्मान रिहा करो ।

लूटा जा रहा है देश का धन और धर्म

- बाबा रामचैतन्य सरस्वतीजी निरंजनी अखाड़ा, शृंगेरी मठ

इतिहास गवाह है कि विदेशियों ने भारत में आकर यहाँ के लोगों का धन भी लूटा और धर्म भी। झूठे मुकदमों में फँसाकर संतों को जेल भेजा जा रहा है, चाहे वे हिन्दुओं के सबसे बड़े पीठाधीश्वर शंकराचार्य हों या जगद्गुरु कृपालुजी महाराज हों, दक्षिण के महान संत नित्यानंद स्वामी हों या फिर वर्तमान में भारतीय संस्कृति के सबसे बड़े ध्वजावाहक संत आशारामजी बापू हों। संतों-महात्माओं पर प्रहार करके लाखों-करोड़ों हिन्दुओं का धर्म लूटा जा रहा है। इसलिए हम सबको एकजुट होकर आवाज उठानी होगी।

योगी राजकुमारजी महाराज, पीठाधीश्वर, श्री बुद्धेश्वर महादेव, प्रयागराज : विधर्मी हमारे हिन्दू धर्म पर कुठाराघात करते ही चले आ रहे हैं। हमारे संत-महात्माओं को परेशान किया जा रहा है। जो नेतृत्व कर रहे हैं, उन्हींको कैद करके दबाव बनाया जा रहा है। ५० वर्ष तपस्या करके जिन्होंने समाज की सेवा की, आज उन्हींके साथ गलत व्यवहार किया गया। अगर आज हिन्दू समाज जागृत नहीं हुआ तो एक-एक करके हमारी आध्यात्मिक व्यवस्था नष्ट कर दी जायेगी।

विकास व सफलता के लिए आवश्यक मातृभाषा व हिन्दी की प्रमुखता

(गतांक से आगे)

राजस्थान पत्रिका। भारत में अंग्रेजी को किस तरह से थोपा गया इसका इतिहास सभीको मालूम है। अंग्रेजों का इसमें बहुत बड़ा स्वार्थ निहित था। लगभग ३० हजार लोगों का एक छोटा-सा ब्रिटिश समूह ३० करोड़ से ज्यादा भारतीयों पर राज करता था। भारतवासियों के एक छोटे-से समूह को अंग्रेजी में इसलिए प्रशिक्षित किया गया ताकि वे ब्रिटिश राज्य संचालन में मदद कर सकें और लोगों के साथ बिचौलिये की भूमिका निभा सकें।

भाषा पर आधारित दीवार के द्वारा राष्ट्र के विकास में भागीदारी से आम जनता को दूर रखा गया, जिसका देश पर गहरा नकारात्मक प्रभाव पड़ा। जहाँ सहभागिता, लोकतांत्रिकता व सभीको मिलाकर चलने की जरूरत थी, वहाँ अंग्रेजी को महत्त्व देने से राष्ट्र, विशिष्ट वर्ग समर्थकों की धरोहर बन गया और भाषा के आधार पर भेद का एक अनोखा रूप देश-व्यवहार में आ गया। आज भारत एक विरला देश है जहाँ देशीय भाषाओं को 'बोलचाल की भाषा' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है (कल्पना करिये कि जापान और जर्मनी में उनकी मातृभाषा को अगर 'बोलचाल की भाषा' कहा जाय तो ?) जबकि उचित तो यह होता कि अंग्रेजी को 'विदेशी' भाषा में वर्गीकृत किया जाता।

कोई भी व्यक्ति जो अंग्रेजी के प्रभुत्व पर सवाल उठाता है उसे विकास-विरोधी और पिछड़ा घोषित कर दिया जाता है। ऐसी तीन प्रमुख मिथ्या धारणाएँ या भ्रम हैं जो अंग्रेजी के समर्थक बनाये रखते हैं। मगर ये तीनों भ्रम छोटे-से-छोटे परीक्षणों पर भी खरे नहीं उतर पाते हैं।

मिथ्या धारणा (१) : स्तरीय शिक्षा के लिए अंग्रेजी की जरूरतों का तर्क दिया जाता है कि आज के जमाने की सभी स्तर की शिक्षा और वैज्ञानिक प्रगति मुख्यतः अंग्रेजी में है। इसलिए भारत को अपना कामकाज मुख्य रूप से अंग्रेजी में करने की जरूरत है।

सत्य : यदि ऐसा होता तो विश्वभर में शिक्षा व वैज्ञानिक जगत में सफल सभी देश ऐसा ही कर रहे होते। मगर ऐसा नहीं है। विज्ञान और आधुनिकीकरण के क्षेत्र में सफलता के बारे में जापान और जर्मनी (और दर्जनों अन्य राष्ट्र) को लेकर कोई संदेह नहीं किया जा सकता और ये देश अपना कामकाज मुख्य रूप से अपनी भाषा में करते हैं। उनकी शिक्षा मुख्य रूप से उनकी मूल भाषा में ही है और सभी वैज्ञानिक जानकारियाँ उनकी अपनी भाषा में आसानी से उपलब्ध हैं। अतः इन अनुभवों से यही पता चलता है कि प्रगति के लिए अंग्रेजी पहली आवश्यकता नहीं है। (क्रमशः)

निंदा के जहर से बचें सत्संग-अमृत का पान करें

- पूज्य बापूजी

जब पाप जोर मारता है न, आदमी कुतर्क करके श्रद्धा तोड़ के अपनी तबाही की तरफ जाता है।

तुलसी पूर्व के पाप से हरिचर्चा न सुहाय।
जैसे ज्वर के जोर से भूख विदा हो जाय ।।

जैसे बुखार जोर पकड़ता है न, तो भूख मर जाती है, ऐसे ही कोई दुष्कृत्य जोर पकड़ता है न, तो आदमी की जिज्ञासा, अच्छी जगह रहने की सूझबूझ नष्ट हो जाती है और श्रद्धा तोड़नेवाले तो पद-पद पर मिलते हैं। संत कबीरजी के लिए लोग क्या-क्या बोलते थे ! नानकजी के लिए क्या नहीं बोले लोग ? श्रीकृष्ण के लिए क्या कमी रखी ? महात्मा बुद्ध के लिए क्या कमी रखी ? अरे, बुद्ध के बगीचे में से तो वेश्या की लाश निकली। जो वेश्या बोलती थी कि 'मेरे को बुद्ध जैसा ग्राहक मिल गया इसलिए अभी मैं जेतवन में ही रहती हूँ, जहाँ बुद्ध रहते हैं।' और फिर बुद्ध के विरोधियों ने खूब कुप्रचार किया। फिर भी आज तक 'बुद्धिज्म' (बौद्ध धर्म) चल रहा है।

और एक बात, जब एक आदमी बोलता है, फिर वही बात दो बोलते हैं, दस बोलते हैं, सौ-हजार आदमी बोलते हैं तो लगता है कि सच्ची बात होगी। तो उस समय कुप्रचार की बात सच्ची मानकर कितने लोग खाई में जा के गिरे ! लेकिन बुद्ध तो तरे, सलूका-मलूका तरे। संत कबीरजी की निंदा सुनकर कई लोग खाई में जा के गिरे, अश्रद्धालु हो गये। सलूका-मलूका को कबीरजी ने कहा कि "भई ! वह वेश्या बोलती है कि मैं उसके बिस्तर पर था, दारूवाला बोलता है कि मैंने दारू पी... ये सब बोलते हैं, सब लोग जा रहे हैं, तुम क्यों नहीं जाते ?"

सलूका-मलूका बोले : "आपके द्वारा हमको ज्ञान मिलता है, आपके दर्शन से हमारी सूझबूझ बढ़ती है, हमें दिव्य शांति मिलती है, आपसे हमको अनंत लाभ होता है। हमारा यह अनुभव सच्चा कि उन लोगों की बातें सच्ची ?"

सलूका-मलूका डटे रहे और ऐरे-गैरे भाग गये तो कबीरजी का क्या बिगड़ा ? मेरे गुरुजी के यहाँ कई आये, कई भाग गये तो मेरे गुरुजी का क्या बिगड़ा ? और हमने सब कुछ सहन किया... वास्तव में हमने कुछ सहन नहीं किया, वह तो उनकी कृपा थी जिन्होंने भी मेरे को भगाने के लिए सब कुछ किया। उनकी कृपा थी कि मुझे मजबूत बनने का अवसर दिया। मैं डटा रहा तो मुझे घाटा क्या पड़ा ?

जिनकी दुर्बुद्धि है उनकी श्रद्धा नष्ट हो जाती है। कोई-न-कोई दूषित कर्म है इसलिए विपरीत विचार आ जाते हैं। जब बुरा करते हैं तो मति मारी जाती है और उलटा देखते हैं। अच्छा करते हैं तो मति खिलती है। भयकृत् भयनाशन... 'भय देनेवाले भी परमात्मा हैं और भय का नाश भी वे ही करते हैं।' जब हम सच्चाई से कर्म करते हैं तो भगवान निर्भीकता देते हैं और वासना व कपट प्रेरित होकर कर्म करते हैं तो तेज धड़कन भी वह ईश्वर देता है। इसलिए लॉबी बनाना, राग-द्वेष बढ़ाना यह बिल्कुल नीच प्रवृत्ति है।

निंदा किसीकी हम किसीसे भूलकर भी ना करें।

निंदा एक ऐसा जहर है, ईर्ष्या एक ऐसा विष है कि जिस हृदय में रहता है उसीको तुच्छ बना देता है, उसीको नीच बना देता है और सत्संग ऐसी महान चीज है कि जिसके हृदय में रहता है अथवा जिसके कान में जाता है उसको पवित्र बना देता है। तो सत्संग का आदर करें, काहे को हलकी बातों का आदर करो !

नौ लक्षण बनाते हैं गुरुकृपा का अधिकारी

सद्गुरु की पूर्ण कृपा पाने के लिए शिष्य में जिन लक्षणों का होना आवश्यक है, उनका वर्णन करते हुए भगवान श्रीकृष्ण उद्धवजी से कहते हैं : ''हे उद्धव ! सभी प्रकार के अभिमानों में ज्ञान का अभिमान छोड़ना बहुत कठिन है। जो उस अभिमान को छोड़ने के लिए तैयार हो जाता है, वह मान-सम्मान की ओर नहीं देखता। सम्मान की इच्छा न रखना ही शिष्य का पहला लक्षण है।

'समस्त प्राणियों में ईश्वर का वास है' ऐसी भावना होने के कारण शिष्य के मन में द्वेष आ ही नहीं सकता। जिसने उसकी निंदा की है उसे वह हित चाहनेवाली माँ के समान समझता है। यह 'मत्सररहितता' ही शिष्य का दूसरा लक्षण है। तीसरा लक्षण है 'दक्षता'। आलस्य या विलम्ब मन को स्पर्श न करे इसीका नाम है दक्षता। 'सोऽहम्' भावना को दृढ़ बनाकर अहंभाव तथा ममता का त्याग 'निर्ममता' ही शिष्य का चौथा लक्षण है।

हे उद्धव ! शिष्य का हित साधने में गुरु ही माता हैं, गुरु ही पिता हैं। सगे-संबंधी, बंधु और सुहृद भी गुरु ही हैं। गुरु की सेवा ही उसका नित्यकर्म है, सच्चा धर्म है, गुरु ही आत्माराम हैं। सद्गुरु को ही अपना हितैषी मानना सत्शिष्य का पाँचवाँ लक्षण है।

शरीर भले ही चंचल हो जाय लेकिन उसका चित्त गुरुचरणों में ही अटल रहता है। गुरुचरणों में जो ऐसी निश्चलता रखता है, वही सच्चा परमार्थी शिष्य है। वही गुरु-उपदेश से एक क्षण में परमार्थ का पात्र हो जाता है। जिस प्रकार एक दीपक से दूसरा दीपक जलाने पर वह भी उसीकी तरह हो जाता है, उसी प्रकार निश्चल वृत्ति के साधक को गुरु प्राप्त होते ही वह तत्काल तद्रूप हो जाता है। अंत:करण की ऐसी निश्चलता ही शिष्य का छठा लक्षण है। इसीसे षट्विकारों का विनाश होता है।

विषय का स्वार्थ छोड़कर पूर्ण तत्त्वार्थ जानने के लिए जो भजन करता है, उसीका नाम है 'जिज्ञासा'। परमार्थ के प्रति नितांत प्रेम तथा बढ़ती हुई आस्था शिष्य का सातवाँ लक्षण है।

हे उद्धव ! सद्गुरु अनेक जनों के लिए शीतल छाँव हैं, शिष्यों की तो माँ ही हैं। उनके प्रति जो ईर्ष्या करेगा उसकी आत्मप्राप्ति तो दूर हुई समझिये। सत्शिष्य का आचरण इस संबंध में बिल्कुल शुद्ध रहता है। वह अपने को ईर्ष्या का स्पर्श नहीं होने देता। गुरु ने उसे सर्वत्र ब्रह्मभावना करने का जो पाठ पढ़ाया होता है, उस पर सदा ध्यान देते हुए वह सबको समभाव से वंदन करता है। किसी भी प्राणी से छल न करना - 'अनसूया' यही शिष्य का आठवाँ लक्षण है। इन आठ महामनकों की माला जिसके हृदयकमल में निरंतर वास करती है, वही सद्गुरु का अनुभव प्राप्त करता है।

सत्य व पवित्र बोलना शिष्य का नौवाँ उत्तम लक्षण है। सद्गुरु से वह विनीत भाव और मृदु वाणी से प्रश्न करता है। गुरुवचन सत्य से भी सत्य है इसे वह भक्तिपूर्वक स्वीकार करता है। सद्गुरु के सामने व्यर्थ की बातें करना महान पाप है यह जानकर वह व्यर्थ की बकवास और मिथ्यावाद नहीं करता। निंदा के प्रति तो वह मूक ही रहता है। उसकी भाषा में कभी छल-कपट और झूठ नहीं होता। वह सदैव सद्गुरु का स्मरण करता रहता है।

शिष्य के ये नौ लक्षण हैं। यह नवरत्नों की सुंदर माला जो सद्गुरु के कंठ में पहनायेगा, वह देखते-देखते सायुज्य मुक्ति (परमात्म-स्वरूप से एकाकारता) के सिंहासन पर आसीन होगा। इन नवरत्नों का अभिनव गुलदस्ता जो सद्गुरु को भेंटस्वरूप देगा, वह स्वराज्य के मुकुट का महामणि बनकर सुशोभित होगा।''

(श्री एकनाथी भागवत, अध्याय : १०)

नारीशक्ति के प्रणेता हैं बापूजी

- रंजना शर्मा, अध्यक्षा, शक्ति सेना

परम पूज्य बापूजी ने महिलाओं के जीवन को ओजस्वी-तेजस्वी बनाने हेतु सत्संग में कई महान नारियों के प्रेरक प्रसंग सुनाये हैं। नारीशक्ति जागृत करने के लिए 'महिला उत्थान मंडल' की सेवा शुरू करवायी, महिला आश्रमों की स्थापना भी करवायी। वहाँ भी साधनामय जीवन जीकर महिलाएँ अपना जीवन उन्नत कर रही हैं। पूज्य बापूजी ने गर्भपात जैसी बढ़ रही कुरीति को रोकने के लिए महिला उत्थान मंडल द्वारा 'गर्भपात रोको अभियान' शुरू करवाया। नौकरी करनेवाली महिलाओं को शोषित होने से बचाया। नारियों में आत्मबल भरने के लिए बापूजी सत्संग में कई उपाय बताते रहे हैं। बापूजी नारीशक्ति के प्रणेता हैं यह बताने के लिए यह सब क्या कम है !

जब से बापूजी जेल गये हैं उस समय से आज तक करोड़ों महिलाएँ, युवा आदि बापूजी का समर्थन कर रहे हैं। ये पढ़े-लिखे वर्ग बेवजह बापूजी का समर्थन कर रहे हैं क्या ? नहीं। इनके समर्थन का एक ही कारण है कि इनको बापूजी ने संयम, सदाचार व सुसंस्कार की शिक्षा दी है तथा बापूजी ने सत्संग, ध्यान, दीक्षा व कृपा से इनके विकारों, दोषों एवं दुर्गुणों को दूर किया है, इनका जीवन-परिवर्तन किया है। अपने इस ठोस स्वानुभव के आगे षड्यंत्रकारी व दुष्प्रचारकों के थोथे आरोपों की कीमत शून्य है।

करोड़ों नारियों के सम्मान, सुरक्षा व आत्मनिर्भरता के लिए वर्षों से संलग्न ऐसे महापुरुष को किसी एक लड़की केनिराधार आरोप से बदनाम कर जेल भेजना निश्चित ही हमारे देश व संस्कृति के लिए अति शर्मनाक व अहितकारी है। करोड़ों लोगों का जीवन सँवारनेवाले महापुरुष के बारे में गंदे शब्दों का प्रयोग दुर्भाग्यपूर्ण है। 'शक्ति सेना' बापूजी जैसे संतों के अपमान का खंडन व पुरजोर विरोध करती रहेगी।

अनंत परब्रह्म परमात्मा अपना स्वरूप ही है

- स्वामी अखंडानंदजी सरस्वती

जहाँ जगत के मूल में चेतन कारण है और वह रूपांतरित होकर जगत बन रहा है, वहाँ (वास्तव में) जगत बना (ही) नहीं है, विवर्त हो रहा है, माने जगत के रूप में प्रतीत हो रहा है। इसलिए जगत का मूल कारण एक सन्मात्र वस्तु है, अखंड सन्मात्र है और वह चेतन है। और वह चेतन भी एकरस है, अपरिणामी है, माने उसमें जगत का केवल विवर्त ही हो रहा है और उसमें आत्मा और परमात्मा का भेद नहीं है। इसलिए वह सम्पूर्ण अनर्थों से रहित है और इस समय भी है। जिस समय नरक में कोई हाय-हाय कर रहा है, उस समय भी वह ब्रह्म ही है। जिस समय बाजार में दौड़ रहा है, उस समय भी ब्रह्म ही है। जिस समय वह समाधि में मग्न हो रहा है, उस समय भी वह ब्रह्म ही है। क्या ज्वार और क्या भाटा, जल तो जल ही है। इसी प्रकार यह ज्वार-भाटा आने से, नाम-रूप की तरंग उठने से उस अनंत परब्रह्म परमात्मा में कोई अंतर नहीं पड़ता है और वह अपना स्वरूप ही है। इसलिए उसको 'शिव' कहा और शिव के बाद 'अद्वैत' है।

सत्शिष्यों की माला के सुवासित पुष्प
श्री नाग महाशय

दुर्गाचरण नाग का जन्म सन् १८४६ में पूर्वी बंगाल के नारायणगंज बंदर के करीब देवभोग नामक बस्ती में हुआ था। बचपन में वे बहुत ही मितभाषी, सुशील और शांत-स्वभाव थे। बड़े होकर वे डॉक्टर बने। परोपकारी स्वभाव होने से वे कभी भी गरीब-दु:खियों की सेवा से चूकते नहीं थे। विवेकसम्पन्न मति के धनी दुर्गाचरण कई बार निकट के श्मशान घाट पर जाते और चिता के ऊपर जलते शव को देखते और सोचते, 'अनित्य... अनित्य... सब अनित्य है। एकमात्र भगवान ही सत्य हैं और उन्हें प्राप्त किये बिना यह जीवन व्यर्थ है। मैं उन्हें कैसे प्राप्त करूँगा ? कौन मुझे पथ दिखायेगा ?' एक दिन वे श्री रामकृष्ण परमहंस के चरणों में पहुँचे। वहाँ लोग इन्हें नाग महाशय के नाम से बुलाते थे।

जब उन्होंने पहली बार श्री रामकृष्ण के दर्शन किये तो वे अत्यंत भावविभोर हो उठे। वे एकटक ठाकुर (रामकृष्णजी) के मुख की ओर देखते रहे। तब ठाकुर ने उनसे पूछा : ''इस ढंग से क्या देख रहे हो ?''

नाग महाशय : ''जिसको देखने आया हूँ, उसीको देख रहा हूँ।'' श्री रामकृष्ण उन्हें कई बार अपनी पंचवटी (कुटीर) में कुछ देर ध्यान करने को भेजते थे। उस बीच कभी-कभी रामकृष्णजी वहाँ आकर उनको छोटी-छोटी सेवाओं का आदेश देने लगे। गुरुसेवा प्राप्त होने पर नाग महाशय के आनंद की सीमा न रही। कुछ ही समय में उनके मन में यह निश्चित धारणा बन गयी कि 'मेरे गुरुदेव साक्षात् नारायण हैं और गुप्त रूप से दक्षिणेश्वर में बैठकर लीला कर रहे हैं।'

नाग महाशय की अपने सद्गुरु में ब्रह्मनिष्ठा एवं गुरुसेवा की उत्कंठा उनके जीवन के कई प्रसंगों से उजागर होती है। एक बार रामकृष्णजी के कमरे में प्रवेश करते ही नाग महाशय को सुनायी पड़ा कि गुरुदेव कह रहे हैं : ''इस समय कहीं आँवला मिल सकता है क्या ?''

भक्तों में से एक ने कहा : ''गुरुदेव ! यह तो आँवले का मौसम नहीं है। कहीं नहीं मिल सकेगा।''

नाग महाशय ने सोचा कि 'गुरुदेव के श्रीमुख से जब आँवले की बात निकली है तो निश्चित ही कहीं-न-कहीं मिल जायेगा।' इसके पहले एक बार जब रामकृष्णजी ने नारंगी की बात कही थी तो कुछ ही क्षणों बाद महाशय कुछ नारंगी लिये दक्षिणेश्वर पहुँचे थे और रामकृष्णजी ने बहुत ही आनंद से उन्हें खाया था। इस प्रसंग का स्मरण करते हुए वे दृढ़ निश्चय के साथ आँवला खोजने के लिए निकल गये। वे आसपास के बगीचों में खोजते हुए घूमते रहे। तीन दिन बाद वे आँवला लेकर ही गुरुदेव के पास पहुँचे। श्री रामकृष्ण खूब आनंदित हुए और कहने लगे : ''ऐसा सुंदर आँवला तुम इस समय कहाँ से लाये !''
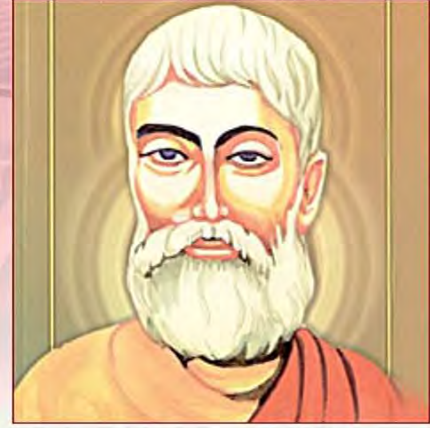
तदनंतर श्री रामकृष्ण ने प्रसन्नतापूर्वक एक शिष्य को महाशय के लिए भोजन तैयार करने के लिए कहा। भोजन तैयार होने पर उन्हें बार-बार बुलाया गया परंतु वे नहीं आये। दरअसल उस दिन एकादशी का उपवास था। उनका मनोभाव था कि 'गुरुदेव से प्रसादरूप में भोजन मिले तो व्रत भंग करूँगा, नहीं तो नहीं।' परंतु यह बात वे व्यक्त नहीं कर पा रहे थे। जब रामकृष्णजी को पता चला तो उन्होंने नाग महाशय की भोजन की पत्तल मँगवायी और पत्तल में रखी सभी चीजों को जिह्वा के अग्रभाग से स्पर्श किया और कहा : ''अब जाकर कहो तो वह खायेगा।'' गुरु का प्रसाद पाकर वे अत्यंत गद्गद हृदय से नमस्कार करते हुए भोजन करने लगे। भोजन करते-करते वे पत्तल तक खा गये।

नाग महाशय को केवल 'यह प्रसाद है' कह के जो भी दे दो, वे उसमें से कुछ नहीं छोड़ते थे। इस घटना के बाद रामकृष्णजी के भक्त उनका भाव देखकर उन्हें पत्तल में

प्रसाद नहीं देते थे। कभी भूल से दे दिया तो भोजन समाप्त होने पर पत्तल खींच लेते थे। अगर प्रसादरूप में फल देते तो जिस फल में गुठली होती, उसमें से गुठली निकालकर ही देते।

गर्मी के दिनों में एक बार श्री रामकृष्ण भोजन के बाद विश्राम कर रहे थे। उन्होंने नाग महाशय को पंखा झलने को दिया और सो गये। कुछ देर तक पंखा झलने के बाद महाशय का हाथ दुखने लगा किंतु गुरुदेव की आज्ञा के बिना वे पंखा झलना कैसे बंद करते ! कुछ समय बाद हाथ इतना अधिक भारी हो गया कि उसे हिलाना भी मुश्किल था। उसी क्षण श्री रामकृष्ण उठे और उन्हें रोक दिया। महाशय कहते थे कि ''सद्गुरु की निद्रा साधारण मनुष्यों की तरह नहीं होती। वे सदा ही जागते रहते हैं।''

एक बार रामकृष्णदेव किसी भक्त से कह रहे थे कि डॉक्टर को धर्मलाभ (ईश्वरप्राप्ति) होना कठिन है। वे कहते थे : ''इतनी-सी औषध में मन पड़ा रहता है तो विराट ब्रह्मांड की धारणा कैसे होगी ?'' नाग महाशय ने यह बात सुन ली और उसी समय संकल्प कर लिया कि 'जो वृत्ति ईश्वर-लाभ में प्रबल बाधा है, उस वृत्ति से अन्न व वस्त्र का लाभ मैं नहीं कमाना चाहता !' उस दिन घर आकर उन्होंने औषध की पेटी और चिकित्सा की पुस्तकें आदि गंगा में फेंक दीं। ऐसी प्रबल गुरुनिष्ठा के धनी थे वे !

वे अपने गुरुदेव की चर्चा के अलावा अन्य चर्चा में रुचि नहीं रखते थे। उनकी गुरुभक्ति का ऐसा प्रभाव था कि उनको देखते ही अन्य शिष्य व्यर्थ वार्तालाप बंद कर अपने सद्गुरु के प्रेरक जीवन-प्रसंगों की बात करने लगते। नाग महाशय विषय-विकारसंबंधी बातें कभी नहीं करते थे और दूसरे लोगों को करते देखते तो युक्ति से बंद करा देते। गुरुसेवा, साधना और गुरुप्रेम में तल्लीन रहनेवाले नाग महाशय श्री रामकृष्ण के उत्तम शिष्यों में से एक हुए।

श्री रामकृष्ण के ब्रह्मलीन होने के बाद जब नाग महाशय को सुविधा-अनुकूल अन्य स्थानों पर रहने के लिए खूब अनुनय-विनय किया गया तो उन्होंने कहा : ''श्री ठाकुर ने मुझे अपने घर के अलावा कहीं और रहने के लिए मना किया है। उनके वाक्य का उल्लंघन करने की मुझमें तिलमात्र भी शक्ति नहीं है।'' ऐसा था उनका अपने गुरु के प्रति समर्पण !

धन्य हैं ऐसे गुरुभक्त जिन्होंने सदैव गुरुआज्ञा-पालन में तत्पर रहकर अपने गुरु से निभाया, उनकी कृपा को पचाया ! नाग महाशय आगे की अनेक पीढ़ियों के लिए भी एक प्रेरक दीपस्तम्भ बने हुए हैं।

सरल एवं लाभदायक व्यान मुद्रा

विधि : अँगूठा, तर्जनी (अँगूठे के पासवाली उँगली) व मध्यमा (सबसे बड़ी उँगली) - इन तीनों के अग्रभाग एक-दूसरे से मिलायें। अनामिका व कनिष्ठिका उँगलियाँ सीधी रखें।

लाभ : (१) रक्त-परिसंचरण नियमित होता है तथा हृदयरोगों में लाभदायी है।

(२) इस मुद्रा का नियमित अभ्यास उच्च रक्तचाप का रामबाण उपाय है।

उच्च रक्तचाप एवं निम्न रक्तचाप पर नियंत्रण हेतु इस मुद्रा के अभ्यास के साथ एक अन्य प्रयोग करें :

जिह्वाबंध : जिह्वा का अग्रभाग तालू में लगायें और दोनों आँखों की पुतलियाँ भौंहों की ओर ले जायें। उसके बाद सिंह मुद्रा अर्थात् जिह्वा को मुँह से अधिक-से-अधिक बाहर निकालें और आँखों की पुतलियाँ भौंहों की ओर ले जायें। उपरोक्त दोनों क्रियाएँ अदल-बदलकर ५-५ बार करें। उच्च रक्तचापवालों के लिए तो यह आशीर्वादरूप है।

(३) गर्भिणियों के लिए भी यह वरदानरूप है।

विशेष : इस सुंदर मुद्रा-विज्ञान का आधार हैं हमारे दोनों हाथ, जिनमें भगवत्शक्ति का निवास है। अतः उँगलियों की निरर्थक खींचातानी व उन पर आघात नहीं करने चाहिए। इनसे शरीर, मन या मस्तिष्क को हानि पहुँच सकती है। कभी-कभी स्मरणशक्ति को भी आघात पहुँच सकता है। हमारे ऋषियों ने हमारा कितना खयाल रखा है कि प्रतिदिन सुबह करदर्शन करने का नियम हमारे लिए बना दिया :

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।

करमूले तु गोविंदः प्रभाते करदर्शनम्॥

बापूजी का साहित्य उन्नति की सीढ़ी
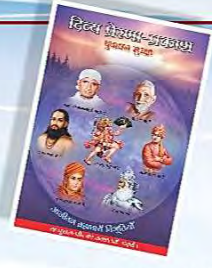
पहले मैं पढ़ने में बहुत कमजोर था। १०वीं की परीक्षा नकल करके पास की, बी.ए. में कृपांक (ग्रेस मार्क्स) से पास हुआ। पढ़ाई के बाद गलत संगत में पड़ गया तथा शराब आदि पीने लगा। २-३ प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग लिया पर उनमें फेल हो गया। अंत में घरवालों ने पैसे देने से मना करते हुए कहा : ''गाँव आकर कोई काम-धंधा कर ले।'' मैंने विनती करके बी.एड. करने की अनुमति माँगी।

उसी दौरान मुझे बापूजी का 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश', 'नशे से सावधान' आदि सत्साहित्य पढ़ने को मिला, जिससे बड़ी हिम्मत व मार्गदर्शन मिला। फिर तो मैं बापूजी का सत्संग बड़े ही प्रेम व आदर से पढ़ने-सुनने लगा और मेरे जीवन की उलझी हुई कई गुत्थियाँ सुलझने लगीं।

कुछ समय बाद मुझे पूज्य बापूजी से दीक्षा लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और मंत्रजप से मेरी स्मरणशक्ति तीव्र हो गयी। मैंने सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी की और वर्ष २०१२ में मेरा चयन आइएएस एलाइड सर्विस हेतु हो गया।

यह सब पूज्य बापूजी की करुणा-कृपा का परिणाम है, अन्यथा कहाँ तो नकल मारकर पास होनेवाला विद्यार्थी और कहाँ आइएएस की कठिन परीक्षा ! साथ ही युवावस्था में मैं कई न कहने योग्य दुर्गुणों, व्यसनों में फँस गया था, उनसे भी मुझे मुक्ति मिल गयी।

मैंने अनेक विद्यार्थियों तक बापूजी का वह सत्साहित्य पहुँचाया है, जिसने मेरा जीवन बदल दिया। मैंने २१ हजार 'भगवद्गीता' तथा बापूजी का सत्साहित्य बाँटने का संकल्प लिया था और वह पूरा भी हो गया है।

- राकेश चौधरी , असिस्टेंट कलेक्टर (झ), दिल्ली

एक घंटे में टी.बी. व कैंसर गायब !

मैंने पहले कुलगुरु से दीक्षा ली थी। मेरे परिचित कहते : ''आप बापूजी से दीक्षा ले लो।'' मैं उन्हें कहती : ''मैं गुरु नहीं बदल सकती।''

एक बार उन्होंने समझाया कि ''पहले से आपके गुरु हैं तो एक कदम आगे बढ़कर सद्गुरु बनाने में कोई हर्ज नहीं अपितु सौभाग्य की बात है।'' पर मैं दीक्षा लेने का निश्चय नहीं कर सकी। एक रात मुझे भगवान शिव के रूप में पूज्य बापूजी के दर्शन हुए। मैंने तुरंत निश्चय कर लिया कि 'अब तो मैं बापूजी से मंत्रदीक्षा जरूर लूँगी।' दीक्षा के बाद मैंने 'ऋषि प्रसाद' की सेवा शुरू कर दी। जीवन को नयी दिशा देनेवाली इस पत्रिका की सेवा से जो संतोष, आनंद, शांति मिली, उसका शब्दों में बयान नहीं हो सकता।

प्रारब्धवश २००६ में मुझे टी.बी. और हड्डियों का कैंसर दोनों हो गये। मैंने बापूजी को आर्तभाव से प्रार्थना की : 'बापूजी ! आपका सत्संग सुनकर मुझे मौत का डर तो नहीं रहा है पर आप इतनी कृपा बनाये रखना कि अस्वास्थ्य के कारण मेरी 'ऋषि प्रसाद' की सेवा न छूटे।' अगले ही दिन बापूजी ने सपने में दर्शन देकर कहा : ''क्यों सो रही है ? उठ ! मंत्रजप कर।'' मैंने बापूजी के सत्संग में असाध्य रोगों को मिटानेवाला मंत्र सुना था, उसका पानी में निहारते हुए श्रद्धापूर्वक जप करके वह जल पी लिया। एक घंटे बाद मैं जाँच करवाने गयी तो दोनों रिपोर्टें एकदम सामान्य आयीं। दोनों बीमारियाँ एक ही घंटे में खत्म ! आज मैं पूर्णरूप से स्वस्थ हूँ।

जो लोग बापूजी को सुनते हैं, मानते हैं लेकिन दीक्षा नहीं ली है, उनसे मेरा अनुरोध है कि बापूजी से दीक्षा ले के साधना और सेवा के पथ पर आगे बढ़िये। आपका जीवन खुशियों से भर जायेगा।

- रीना डोडवानी, मुंबइ

जल है औषध समान

अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम् ।
भोजने चामृतं वारि भोजनान्ते विषप्रदम् ।।

'अजीर्ण होने पर जल-पान औषधवत् है। भोजन पच जाने पर अर्थात् भोजन के डेढ़-दो घंटे बाद पानी पीना बलदायक है। भोजन के मध्य में पानी पीना अमृत के समान है और भोजन के अंत में विष के समान अर्थात् पाचनक्रिया के लिए हानिकारक है।' (चाणक्य नीति : ८.७)

विविध व्याधियों में जल-पान

(१) अल्प जल-पान : उबला हुआ पानी ठंडा करके थोड़ी-थोड़ी मात्रा में पीने से अरुचि, जुकाम, मंदाग्नि, सूजन, खट्टी डकारें, पेट के रोग, तीव्र नेत्र रोग, नया बुखार और मधुमेह में लाभ होता है।

(२) उष्ण जल-पान : सुबह उबाला हुआ पानी गुनगुना करके दिनभर पीने से प्रमेह, मधुमेह, मोटापा, बवासीर, खाँसी-जुकाम, नया ज्वर, कब्ज, गठिया, जोड़ों का दर्द, मंदाग्नि, अरुचि, वात व कफ जन्य रोग, अफरा, संग्रहणी, श्वास की तकलीफ, पीलिया, गुल्म, पार्श्व शूल आदि में पथ्य का काम करता है।

(३) प्रातः उषापान : सूर्योदय से २ घंटा पूर्व, शौच क्रिया से पहले रात का रखा हुआ पाव से आधा लीटर पानी पीना असंख्य रोगों से रक्षा करनेवाला है। शौच के बाद पानी न पियें।

औषधिसिद्ध जल

(१) सोंठ-जल : दो लीटर पानी में २ ग्राम सोंठ का चूर्ण या १ साबूत टुकड़ा डालकर पानी आधा होने तक उबालें। ठंडा करके छान लें। यह जल गठिया, जोड़ों का दर्द, मधुमेह, दमा, क्षयरोग (टी.बी.), पुरानी सर्दी, बुखार, हिचकी, अजीर्ण, कृमि, दस्त, आमदोष, बहुमूत्रता तथा कफजन्य रोगों में खूब लाभदायी है।

(२) अजवायन-जल : एक लीटर पानी में एक चम्मच (करीब ८.५ ग्राम) अजवायन डालकर उबालें। पानी आधा रह जाय तो ठंडा करके छान लें। उष्ण प्रकृति का यह जल हृदय-शूल, गैस, कृमि, हिचकी, अरुचि, मंदाग्नि, पीठ व कमर का दर्द, अजीर्ण, दस्त, सर्दी व बहुमूत्रता में लाभदायी है।

(३) जीरा-जल : एक लीटर पानी में एक से डेढ़ चम्मच जीरा डालकर उबालें। पौना लीटर पानी बचने पर ठंडा कर छान लें। शीतल गुणवाला यह जल गर्भवती एवं प्रसूता स्त्रियों के लिए तथा रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर, अनियमित मासिकस्राव, गर्भाशय की सूजन, गर्मी के कारण बार-बार होनेवाला गर्भपात व अल्पमूत्रता में आशातीत लाभदायी है।

ध्यान दें : (१) भूखे पेट, भोजन की शुरुआत व अंत में, धूप से आकर, शौच, व्यायाम या अधिक परिश्रम व फल खाने के तुरंत बाद पानी पीना निषिद्ध है।

(२) अत्यम्बुपानान्न विपच्यतेऽन्नम् अर्थात् बहुत अधिक या एक साथ पानी पीने से पाचन बिगड़ता है। इसीलिए मुहुर्मुहुर्वारि पिबेदभूरि। बार-बार थोड़ा-थोड़ा पानी पीना चाहिए।

(भावप्रकाश, पूर्व खंड : ५.१५७)

(३) लेटकर, खड़े होकर पानी पीना तथा पानी पीकर तुरंत दौड़ना या परिश्रम करना हानिकारक है। बैठकर धीरे-धीरे चुस्की लेते हुए बायाँ स्वर सक्रिय हो तब पानी पीना चाहिए।

(४) प्लास्टिक की बोतल में रखा हुआ, फ्रिज का या बर्फ मिलाया हुआ पानी हानिकारक है।

(५) सामान्यतः १ व्यक्ति के लिए एक दिन में डेढ़ से दो लीटर पानी पर्याप्त है। देश-ऋतु-प्रकृति आदि के अनुसार यह मात्रा बदलती है।

सुप्रचार-सेवा प्रशिक्षण शिविर

देशसेवा, गुरुसेवा एवं 'ऋषि प्रसाद' के दैवी कार्य में लगे सभी पुण्यात्माओं व गुरुभक्तों को गुरुपूर्णिमा के पावन पर्व पर विशेष आमंत्रण !

गुरु-शिष्य परम्परा का सबसे बड़ा पर्व है गुरुपूर्णिमा । इस दिन हर शिष्य अपने गुरुदेव के श्रीचरणों में सेवा-साधना व श्रद्धा-विश्वास रूपी पुष्प अर्पण करता है, साथ ही नये उत्साह के साथ सेवा-साधना का नया संकल्प भी लेता है।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अहमदाबाद आश्रम में गुरुपूर्णिमा पर्व मनाया जायेगा। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि पूज्य बापूजी व आश्रमों के विरुद्ध एक गहरा षड्यंत्र चल रहा है और बिकाऊ मीडिया लोगों से सच्चाई छुपाकर कुप्रचार करके इस षड्यंत्र का हिस्सा बना हुआ है । अतः आज आवश्यकता है कि हम सभी एकजुट होकर एक संयुक्त कार्य-योजना बना के इस षड्यंत्र का पर्दाफाश करते हुए जन-जन तक सच्चाई को पहुँचायें और अपनी गुरुभक्ति व देशभक्ति का परिचय दें। इस उद्देश्य से १३/०७/२०१४ को अहमदाबाद आश्रम में सुबह १० बजे से 'सुप्रचार-सेवा प्रशिक्षण शिविर' व 'अखिल भारतीय ऋषि प्रसाद सेवादार सम्मेलन' का आयोजन किया गया है। इसमें अनुभवी साधकों तथा समाज-सेवकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जायेगा। सभी साधक, ऋषि प्रसाद सेवादार एवं समाजसेवी इस शिविर में भाग ले सकते हैं।

जो भी श्रद्धालु साधक इस शिविर में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने नजदीकी आश्रम के ऋषि प्रसाद कार्यालय में सम्पर्क करें तथा अपना नाम व दूरभाष क्रमांक जरूर लिखवायें।

बह रही है सेवाकार्यों की अविरल गंगा

बुद्ध पूर्णिमा पर हुए विभिन्न कार्यक्रम व सेवाकार्य

बुद्ध पूर्णिमा के दिन अपने प्यारे गुरुदेव की एक झलक पाने हेतु देश के कोने-कोने से साधक जोधपुर पहुँचे। इंदौर, हरिद्वार, जयपुर तथा जंतर-मंतर (दिल्ली) में पूर्णिमा के निमित्त आये साधकों को आश्रम के वक्ताओं के सत्संग का लाभ प्राप्त हुआ। जंतर-मंतर पर लगातार २८९ दिनों से जारी धरने में पूर्णिमा के दिन बड़ी संख्या में लोग पहुँचे तथा इस दिन दिल्ली में आयोजित विशाल शोभायात्रा में भक्तों की भीड़ देखते ही बनती थी।

आदिवासी क्षेत्र गोगुंदा (राज.) में हर पूनम की तरह इस बार भी गरीबों में भंडारा हुआ। पेटलावद आश्रम (म.प्र.) में हुए साधक-सम्मेलन में साधकों ने समाज तक सच्चाई पहुँचाने तथा नियमित सुप्रचार करने का संकल्प लिया। अहमदाबाद आश्रम में ५१ कुंडी सामूहिक यज्ञ हुआ। पंचेड़ आश्रम (म.प्र.) में ११ कुंडी हवन व भंडारा तथा जम्मू में संत-सम्मेलन हुआ।

बुद्ध पूर्णिमा के निमित्त देश के सभी आश्रमों में हवन-यज्ञ, भजन-कीर्तन, विडियो सत्संग आदि कार्यक्रम हुए तथा सैकड़ों स्थानों पर भंडारे एवं शरबत, छाछ, प्रसाद आदि वितरण के साथ संकीर्तन यात्राएँ व प्रभातफेरियाँ भी निकाली गयीं।

अक्षय तृतीया पर निष्काम सेवा में जुटे साधक

पुण्यकर्मों का अक्षय फल देनेवाली अक्षय तृतीया पर भुवनेश्वर (ओड़िशा) के साधकों द्वारा गरीबों में भंडारा, पलाश शरबत तथा टोपी, चप्पल, सत्साहित्य आदि का वितरण हुआ। जगन्नाथपुरी में गरीबों में पलाश शरबत की बोतलें बाँटी गयीं। उदयपुर (राज.) में भंडारे से तृप्त हुए दरिद्रनारायणों ने जब वस्त्र व नकद दक्षिणा के साथ साधकों का अपनत्व पाया तो उनकी आँखों में प्रेमाश्रु भर आये। इस दिन नासिक के गरीबों में भी भंडारा हुआ। जालंधर, कोटा-रायपुर, करोलबाग-दिल्ली, डूँगरपुर (राज.), रोहतक (हरि.), अहमदाबाद सहित सैकड़ों स्थानों पर शरबत, प्रसाद आदि का वितरण हुआ।

अहमदाबाद आश्रम में ५१ कुंडी यज्ञ हुआ। साथ ही जोधपुर, जयपुर, पुष्कर (राज.), करोलबाग-दिल्ली, लखनऊ आदि स्थानों पर हुए हवन-यज्ञों में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए।

मेरठ, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.), फरीदाबाद (हरि.), पुष्कर (राज.), भुवनेश्वर, लड्डूगाँव जि. कालाहांडी, जयपटना (ओड़िशा), फिरोजपुर (पंजाब), पेटलावद (म.प्र.), हरिद्वार, गोरेगाँव-मुंबई तथा काठमांडू (नेपाल) में पूज्य बापूजी व नारायण साँईंजी की शीघ्र रिहाई हेतु हवन-यज्ञ हुए।

सुख-शांतिमय जीवन का संदेश देती प्रभातफेरियाँ

हाथों में प्रसाद व सत्साहित्य, हृदय में सबकी भलाई के भाव और मुख से भगवान के पवित्र नामों का संकीर्तन करते हुए साधक... यह नजारा देश में सैकड़ों स्थानों पर देखने को मिल रहा है, जहाँ नियमित रूप से प्रभातफेरियाँ निकाली जा रही हैं।

गाजियाबाद एवं दिल्ली में साधकों ने प्रतिदिन अलग-अलग क्षेत्रों में प्रभातफेरियाँ निकाल के वातावरण एवं वैचारिक शुद्धि का कार्य पिछले २८० दिनों से निरंतर जारी रखा है। भुवनेश्वर (ओड़िशा) की प्रभातफेरी को लगातार ८० दिन हो चुके हैं, जिसमें बड़ी संख्या में शामिल हो रही माताओं-बहनों को देखकर लगता है मानो यहाँ पर षड्यंत्र का पर्दाफाश कर लोगों को जगाने का पूरा जिम्मा नारीशक्ति ने ही ले लिया है। लखनऊ में प्रभातफेरी को १३५ दिन पूरे हो चुके हैं। अलीगढ़ (उ.प्र.) में २०९ दिन, बिलासपुर (छ.ग.) में १२९ दिन, फरीदाबाद (हरि.) में ९३ दिन तथा नागपुर में पिछले ५९ दिन से लगातार प्रभातफेरियाँ निकाली जा रही हैं।

रायपुर, भिलाई, राजनांदगाँव (छ.ग.), लुधियाना (पंजाब), खड़गपुर, हावड़ा (प.बं.), इंदौर, सागर (म.प्र.), नागपुर, गोरेगाँव-मुंबई, ताकलघाट और बूटीबोरी जि. नागपुर (महा.), इग्लास, अलीगढ़, मथुरा, नोयडा (उ.प्र.), जोधपुर, जयपुर, दौसा (राज.), साहूपुरा-वल्लभगढ़, हिसार, फरीदाबाद (हरि.), पौंटा साहिब (हि.प्र.), करोलबाग-दिल्ली आदि स्थानों पर भी प्रभातफेरियाँ तथा कीर्तनयात्राएँ सतत निकाली जा रही हैं।

चुनाव के दौरान देशभर में अनेक स्थानों पर मतदाता जागृति यात्राएँ निकालकर लोगों को अपने मताधिकार के प्रति सजग किया गया।

छाछ, शरबत वितरण व शीतल जल प्याऊ सेवा

अहमदाबाद शहर में पिछले २ महीने से छाछ व शरबत वितरण की सेवा सुबह से शाम तक चालू रहती है। मालेगाँव में छाछ व शरबत वितरण सेवा के उद्घाटन के अवसर पर वहाँ के विधायक, शिवसेना के नेता दादा भाऊ भूसे ने छाछ वितरण करके सेवा का शुभारम्भ किया।

जोधपुर, रोहतक, कोलकाता, सिन्नर जि. नासिक, दमोह (म.प्र.), खड़गपुर (प.बं.), बारडोली (गुज.) आदि स्थानों पर भी छाछ व शरबत वितरण किया गया। लखनऊ में प्रत्येक गुरुवार को शहर में अलग-अलग स्थानों पर सेवाकेन्द्रों के माध्यम से शीतल जल व शरबत के अलावा सत्साहित्य, सीडियाँ, पर्चे आदि सुप्रचार सामग्री का वितरण किया जाता है। होशियारपुर में 'गंगा जयंती' पर शरबत वितरण किया गया।

युवाओं एवं बालकों द्वारा हो रहे विभिन्न सेवाकार्य

पूज्य बापूजी द्वारा दिये गये सुसंस्कारों की सुवास से युवाओं का यौवन वंदनीय हो रहा है, वे सहज में ही निष्काम सेवा की ओर प्रेरित हो रहे हैं। जालंधर 'युवा सेवा संघ' द्वारा वृद्धाश्रमों एवं अपाहिजों में पलाश शरबत व अन्य जरूरी वस्तुओं का वितरण किया गया। समाज को नशे से सावधान करने के लिए एक गोष्ठी (चर्चासत्र) का आयोजन किया गया। हैदराबाद में युवा सेवा संघ द्वारा जल प्याऊ सेवा शुरू की गयी। रायपुर में अखिल छत्तीसगढ़ युवा सेवा संघ द्वारा पलाश शरबत व पुलाव का वितरण किया गया।

बाल संस्कार केन्द्र, सम्बलपुर के बच्चों ने गरीबों में टोपियों का वितरण किया। लखनऊ में बाल संस्कार केन्द्र के बच्चों ने व्यसनमुक्ति अभियान के तहत रैली निकाली तथा लोगों को नशे से होनेवाली हानियों के प्रति सचेत किया। यहाँ बच्चों ने सुप्रचार संकीर्तन यात्रा भी निकाली।

पिछले २ महीनों से देशभर में 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविर' एवं 'योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रम' निरंतर जारी हैं।

जप-पाठ आदि द्वारा संस्कृति-रक्षा का संकल्प

निर्दोष पूज्य बापूजी, श्री नारायण साँईं एवं साधकों की शीघ्र रिहाई हेतु अहमदाबाद आश्रम में दिनांक २ से ९ मई तक तथा ११ से १९ मई तक हुए भगवन्नाम-जप अनुष्ठान में सैकड़ों साधक भाई-बहनों ने भाग लिया। इस दौरान २ से ९ मई तक प्रतिदिन एवं १७ व १९ मई को ५१ कुंडी तथा १८ मई को १०८ कुंडी महायज्ञ हुए, जिनमें बड़ी संख्या में साधक-भक्त उपस्थित थे। अधिकांश आश्रमों में भगवन्नाम-जप अनुष्ठान एवं हवन-यज्ञ आदि कार्यक्रम निरंतर जारी हैं। बरेली (उ.प्र.) में ९ दिवसीय शतचंडी महायज्ञ हुआ। यज्ञ की पूर्णाहुति के दिन कई संतों का आगमन हुआ एवं श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। सभीने बापूजी के खिलाफ चल रहे षड्यंत्र के प्रति विरोध दर्ज किया। जालंधर आश्रम में पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई व दर्शन हेतु श्री आशारामायण के १००८ पाठ किये गये।

सत्संग प्रचार मंडल, जम्मू-कश्मीर द्वारा प्रोजेक्टर पर पूज्य बापूजी का विडियो सत्संग तथा षड्यंत्र की पोल-खोल दिखाने की सुंदर सेवा अबाध रूप से चल रही है।

महिला सर्वांगीण विकास शिविरों का आयोजन

पिछले ५० वर्षों से पूज्य बापूजी नारी सशक्तीकरण के लिए नारीशक्ति को जागृत करते आये हैं। पूज्य बापूजी द्वारा प्रेरित 'महिला उत्थान मंडल' द्वारा यह दैवी कार्य विभिन्न अभियानों के माध्यम से सतत जारी है। इसीके अंतर्गत मई महीने में कानपुर, इलाहाबाद तथा लखनऊ (उ.प्र.) में महिला सर्वांगीण विकास शिविरों का आयोजन हुआ।

इन शिविरों में नारी सशक्तीकरण, दिव्य शिशु संस्कार, गर्भपात से होनेवाली हानियाँ, बच्चों को कैसे बनायें संस्कारी और महान, देश व समाज के विकास में नारी का योगदान आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया। शिविर में स्पर्धाएँ भी हुईं। विजेता महिलाओं को पुरस्कृत किया गया। लखनऊ में सौभाग्य तथा आरोग्य प्रदायक गौ-पूजन की महिमा बताकर गौ-पूजन भी करवाया गया। जालंधर में 'महिला उत्थान मंडल' की राज्यस्तरीय संस्कार सभा सम्पन्न हुई।

ऋषि प्रसाद सुप्रचार सेवा मंडल द्वारा सेवाकार्य

'ऋषि प्रसाद सुप्रचार सेवा मंडल' द्वारा व्यापक स्तर पर सेवाकार्य किये जा रहे हैं। दिनांक ७ से ९ मई तक दिल्ली के मोहन गार्डन, सुभाष नगर एवं नजफगढ़ में शरबत और सत्साहित्य वितरण के साथ आश्रम के वक्ताओं का सत्संग-कार्यक्रम भी हुआ। १५ मई को एक भागवत कथा के कार्यक्रम में श्रद्धालुओं को सत्साहित्य वितरित कर पूज्य बापूजी के खिलाफ चल रही साजिश से अवगत कराया गया।

२५ मई को ऋषि प्रसाद मंडल (दिल्ली) द्वारा १००वें महासुप्रचार अभियान के तहत गुड़गाँव में विशाल सुप्रचार यात्रा निकाली गयी।

जोधपुर में ऋषि प्रसाद सम्मेलन हुआ, जिसमें सेवादारों की सेवानिष्ठा देखकर एवं उनके अनुभवों को सुनकर सभीमें एक नयी ऊर्जा का संचार हो गया।

गायों को खिलाये जा रहे हैं तरबूज और कद्दू

आश्रम द्वारा चलायी जा रही गौशालाओं में गायों को नियमित हरी घास, खली आदि पौष्टिक पदार्थों के साथ बदलते मौसम के हिसाब से कभी तिल का तेल, गुड़, मूँगफली तो कभी नारियल के तेल का हलुवा, गेहूँ का दलिया और विशेष प्रकार के लड्डू खिलाये जाते हैं। गर्मी से राहत के लिए निवाई गौशाला में इन दिनों गायों को तरबूज और कद्दू खिलाये जा रहे हैं।

गुरुभक्त कांतिलालजी को श्रद्धांजलि

बड़ौदा निवासी श्री चिमनलाल शाह व जीवकोर बहन के यहाँ उनके होनहार सुपुत्र के रूप में दिनांक १४ मार्च १९४३ को कांतिलालजी का जन्म हुआ था। कांतिलालजी (कांति काका) एक व्यापारी थे। इनमें भगवद्भक्ति के संस्कार बचपन से ही थे। परंतु इनके महासौभाग्य का उदय तब हुआ जब इन्हें सन् १९९३ में जन्माष्टमी शिविर, सूरत में पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा मिली। दीक्षा के बाद इनका जीवन सादगी, सरलता व परोपकार आदि दैवी गुणों से सुसम्पन्न हो गया। दुकान का काम करने के साथ ये 'श्री योग वेदांत सेवा समिति' में हिसाब-किताब सँभालने की सेवा भी बड़ी ईमानदारी व तत्परता से करते थे। गुरुभक्ति व प्रबल वैराग्य के प्रताप से २००७ में ये घर-परिवार व व्यापार छोड़कर गुरुचरणों में समर्पित हो गये। बड़ौदा आश्रम में रहते हुए काका आश्रम की देखरेख तथा हिसाब-किताब बड़ी ही ईमानदारी व निष्ठापूर्वक करते थे।

कांतिलालजी की नियमनिष्ठा में भी बहुत दृढ़ता थी। रोज सुबह ४ बजे उठकर स्नान आदि से निवृत्त हो जप-पाठ में लग जाना, रात्रि ९ बजे शयन, त्रिकाल संध्या करना तथा सत्संग सुनना इनका रोज का पक्का नियम था। जैसे योगी अपना शरीर छोड़ते हैं उसी प्रकार कांतिलालजी का २३ मई २०१४ को सुबह ५.३० बजे जब शरीर शांत हुआ, तब वे ज्ञानमुद्रा में व पद्मासन लगाकर बैठे हुए थे।

गुरुभक्त कांति काकाजी को समस्त साधक परिवार की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि ! भक्तियोग, ज्ञानयोग, कर्मयोग तीनों से सुसम्पन्न, गुरुप्रसादी को पचानेवाले पावन आत्मा ने विदाई ली। विलक्षण है, धन्य है उनका जीवन ! धन्य हैं उनके माता-पिता !

आलस्य न करे

आलस्य तमाम अभावों और कष्टों का मूल है। कुछ विद्यार्थी प्रातःकाल उठने में आलस्य करने के कारण ही विद्योपार्जन में निर्बल रहते हैं, साथ ही प्रातःकालीन स्वस्थ, शक्तिप्रद वायु तथा सूर्योदय की तमाम प्राणतत्त्व-प्रदायिनी किरणों के अनुपम लाभ से भी वंचित रहते हैं। जिस ऊषाकाल में अचेतन प्रकृति भी जागती जैसी दिखती है, उस समय सचेतन मानव सोता रहे तो यह उसकी मूर्खता है।

जिस प्रकार लोहे को उसका जंग खा जाता है उसी प्रकार शरीर के लिए आलस्य हानिप्रद होता है, अतएव आलस्य छोड़ने के लिए अधिक परिश्रम करके उद्यत रहना चाहिए।

आलस्यवश ही पुत्र माता-पिता की सेवा का सौभाग्य खो देता है, पत्नी पतिसेवारूपी पुण्य को खो देती है। आलस्य के कारण संतान रोगी और निर्बल होती है।

बुद्धिमान और सौभाग्यशाली वही है जो विद्योपार्जन में आलस्य न करे। बड़ों के तथा दीन-दुःखियों के आतिथ्य और रोगी की सेवा-सहायता में आलस्य न करे। जिस वस्तु की अभी आवश्यकता है उसे लाने और लायी हुई वस्तु को यथास्थान पहुँचाने में भी आलस्य न करे। शुभ प्रतिज्ञा करे एवं जो प्रतिज्ञा कर ली है उसको पूरा करने में आलस्य न करे। अपनी दैनिक, शारीरिक, मानसिक शुद्धि क्रियाओं में आलस्य न करे। आलस्य बहुत ही अनर्थकारी रोग है। आलस्य के त्याग में भी आलस्य नहीं करना चाहिए।

‘भजन करो, भोजन करो, रोजी पाओ’ योजना के अंतर्गत गरीबों एवं आदिवासियों में पलाश शरबत की बोतलों का वितरण

इसके अलावा अनेक स्थानों पर वस्त्र, अनाज आदि जीवनोपयोगी वस्तुओं का भी वितरण किया गया।

कंधकेलगाँव, जि. बलांगीर (ओड़िशा)
लइड़गाँव, जि. कालाहांडी (ओड़िशा)
ढोराला, जि. उस्मानाबाद (महा.)

सिरसिल्ला (आंध्र प्रदेश)
श्रीपाली भाटेल, जि. कालाहांडी (ओड़िशा)
प्रकाशा (महा.)

सोलापुर (महा.)
जगन्नाथपुरी
कोलकाता

अम्बाजी (गुज.)
दोंडाइचा, जि. धुलिया (महा.)
मालेगाँव, जि. नासिक

सुख-शांतिप्रद प्रभातफेरियों के द्वारा जन-जागरण करते पूज्य बापूजी के शिष्य

चांदवड, जि. नासिक | गुड़गाँव (हरि.) | भिलाई (छ.ग.) | नागपुर | जोधपुर (राज.)

अलीगढ़ (उ.प्र.)

बिलासपुर (छ.ग.)

मुरैना (म.प्र.)

ऊना (हि.प्र.)

लखनऊ

देशभर में सतत चल रहीं शीतल शरबत, छाछ एवं जल प्याऊ सेवाओं की एक झलक

अहमदाबाद

रोहतक (हरि.)

कोलकाता

लखनऊ

भावनगर (गुज.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।

सद्गुरु साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज
एवं पूज्य बापूजी

भारतवर्ष की पहचान है उसकी आध्यात्मिक धरोहर ! बदलते हुए समय व परिस्थितियों के अनुसार इस आध्यात्मिकता को जीवन में उतारने की अद्भुत कला भी भारतवर्ष के मनीषियों ने संसार को सिखायी है । स्वयं कष्ट सहकर भी जो समाज को उन्नति के मार्ग पर चलाते हैं, ऐसे ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का पर्व है गुरुपूर्णिमा ।

साधकों का सबसे बड़ा पर्व

गुरुपूर्णिमा

१२ जुलाई